दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक बड़े चाचाजी, स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर रचित अनुपम पुस्तक चतुरङ्ग का अविकल अनुवाद है। हिन्दी पाठकों के सम्मुख यह पुस्तक सर्वप्रथम उपस्थित की जा रही है। यह सौभाग्य की बात है कि चौधरीजी ने इसके प्रकाशन का भार उठाया है।

यह पुस्तक उपन्यास है और एक अनुपम रचना है। इसकी लेखन शैली—अद्वितीय है। भावों की गम्भीरता लेखक के अनुकूल है। हिन्दी जगत् को अबतक रविबाबू की इस रचना के रसास्वादन का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ था। प्रसन्नता की बात है कि अब इस अभाव की पूर्ति हो रही है।

अनुवाद में कहीं हेर फेर नहीं किया गया है। यथा-सम्भव प्रत्येक शब्द का अविकल ठीक ठीक अर्थ लिख दिया गया है। महापुरुषों की रचनाओं का भावानुवाद करना या उलट फेर करना कदापि उचित नहीं समझा जा सकता। इस विचार से मैंने विश्ववरेण्य रविबाबू के प्रति असीम भक्ति-भाव हृदय में पोषण करके इसका अनुवाद किया है। पाठकों को इसके पाठ से वही आनन्द प्राप्त होगा जो मूल बंगला पुस्तक के पाठ से मिल सकता है।

इन अनुवाद में मेरे मित्र श्री माधोलाल ने यथेष्ट सहायता दी है। एतदर्थ मैं उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

पाठकों से निवेदन है कि यदि किसी तरह की त्रुटि इस पुस्तक में दिखाई पड़े तो कृपया सूचित करें। चौधरीजी से मैं अनुरोध करूंगा आगामी संस्करण में उसे दूर कर दिया जायगा।

—अनुवादक

बड़े चाचाजी

१

मैं गाँव से कलकत्ते आकर कालेज में भर्ती हो गया। उन दिनों शचीश बी. ए. में पढ़ रहा था। हमलोगों की उम्र लगभग समान ही होगी।

शचीशको देखने से मालूम होता जैसे कोई तेजस्वी नक्षत्र है—उसकी आँखें तेज चमक रही हैं उसकी लम्बी लम्बी पतली अँगुलियाँ मानो अग्नि की शिखाएँ हैं उसके शरीर का रंग मानो रंग ही नहीं, बल्कि आभा है। शचीश को जब मैंने देखा, उसी क्षण मानो उसकी अन्तरात्मा को ही देख लिया—इसीलिए एक मुहूर्त में ही मैं उसे प्यार करने लगा।

किन्तु आश्चर्य तो यह है कि जो लोग शचीश के साथ पढ़ते हैं उनमें से बहुतों के मन में उसके प्रति बड़ा विद्वेष है। असल बात तो यह है कि जो लोग दस आदमियों की तरह हैं, उनका अकारण ही दस के साथ कोई झगड़ा नहीं होता। किन्तु मनुष्य के अन्दर का देदीप्यमान सत्यपुरुष जिस समय स्थूलता भेद कर दिखाई पड़ता है तब, बिना कारण ही कोई तो उसको जी जान से पूजा करता है और कोई अकारण ही उसे जी जान से अपमानित करता है। मेरे मेस के लड़कों ने

समझ लिया था कि मैं मन ही मन शचीश के प्रति भक्तिभाव रखता हूँ। इस बात से सदा ही मानो उसके आराम को चोट पहुचती थी। इसलिए मुझे सुनाकर शचीश के सम्बन्ध में कटूक्ति कसने में उनका एक दिन भी खाली नहीं जाता था। मैं यह जानता था कि आँख में बालू पड़ जाय तो उसे रगड़ने से वह ज्यादा दुखित है—जहाँ पर कर्कश वचन सुनाई पड़े वहाँ उत्तर न देना ही अच्छा है। किन्तु एक दिन शचीश को लक्ष्य करके ऐसी निन्दनीय बातें उठीं कि मैं चुप न रह सका।

मेरी कठिनाई यह थी कि मैं शचीश को जानता नहीं था। दूसरे पक्ष के लोगों में कुछ तो उसके अड़ोस पड़ोस के थे या उससे किसी तरह की रिश्तेदारी का नाता रखते थे। वे खूब जोरदार शब्दों में बोल उठे यह बात बिल्कुल ही सच है मैंने और भी जोर देकर कहा, इसमे रत्ती भर भी विश्वास नहीं करता। इसपर मेस भर के सभी लड़कें आस्तीन समेटकर बोल उठे—तुम तो बड़े ही असभ्य मालूम पड़ते हो जी।

उस रात को बिस्तर पर लेटे लेटे मुझे रुलाई आ गयी। दूसरे दिन क्लास की पढ़ाई के बीच थोड़ी देर की छुट्टी मिलने पर, जब शचीश गोल दीघी की छाया में घास पर लेटा हुआ एक पुस्तक पढ़ रहा था मैं बिना जान पहचान क ही उसके पास जाकर अण्टसण्ट क्या क्या बक गया इसका कोई ठिकाना नहीं। शचीश पुस्तक बन्द करके मेरे मुँह की ओर कुछ देर तक देखता रहा। जिन्होंने कभी उसकी आँखें नहीं देखी हैं वे नहीं समझ सकते कि वह कैसी दृष्टि है।

शचीश ने कहा जो लोग निन्दा करते हैं वे निन्दा पसन्द

करते हैं इसीलिए करते हैं। सत्यके प्रति प्रेम रखने के कारण नहीं। यदि ऐसी ही बात है तो कोई निन्दा की बात सच नहीं है, यह प्रमाणित करने के लिए छटपटाने से क्या लाभ होगा?

मैंने कहा तो भी देखिये मिथ्यावादी को—

शचीश ने बीच ही में रोककर कहा—वे लोग तो मिथ्यावादी नहीं हैं। हमारे मुहल्ले में पक्षाघात की बीमारी के कारण एक तेली के लड़के के पैर काँपते हैं, वह कोई काम नहीं कर पाता। जाड़े के दिनों में उसको एक दामी कम्बल दिया था। उस दिन मेरा नौकर शिबू क्रोध में बड़बड़ाता हुआ आकर बोला बाबूजी! उसका काँपना-ओपना तो एकदम बदमाशी है।—मुझमें कुछ अच्छाई है इस बात को जो लोग महत्व देते हैं—उनकी दशा ठीक उस शिबू की ही तरह है। वे लोग जो कुछ कहते हैं उसमें सचमुच ही विश्वास रखते हैं। सौभाग्य से मुझे अपनी जरूरत से अधिक एक दामी कम्बल मिल गया। शिबू के सभी साथियों ने एक मतसे दृढ़ निश्चय कर लिया है कि उसपर मेरा कोई अधिकार नहीं है। इस बातको लेकर उन लोगों क साथ झगड़ा करन में मुझे लज्जा मालूम होती है।

इसका कुछ भी उत्तर न देकर मैं बोल उठा उन लोगों का कहना है कि आप नास्तिक हैं क्या यह बात सच है?

शचीश ने कहा हा मैं नास्तिक हूँ।

मेरा सिर झुक गया। मैंन मेस के लोगों से झगड़ा करते हुए कहा था कि शचीश किसी भी हालत में नास्तिक नहीं हो सकता।

शचीश के बारे में शुरू में ही मुझे दो बार बड़ी चोट पहुँच चुकी है। उसे देखते ही मैंने समझ लिया था कि वह

ब्राह्मण का लड़का है। देवमूर्ति की तरह उसका मुखड़ा देखने में सफेद पत्थर का गढा हुआ-सा मालूम होता था। मैंने सुना था कि उसकी वंशगत उपाधि मल्लिक है। मेरे गांव में भी मल्लिक उपाधि धारी एक घर कुलीन ब्राह्मण का है किन्तु बादको मुझे मालूम हुआ है कि शचीश जाति का सुनार है। हमलोग निष्ठावान कायस्थ हैं। जातिमर्यादा के हिसाब से हमलोग एक सोनार को हार्दिक घृणा की दृष्टि से देखते हैं और नास्तिक को तो नरघातक से भी अधिक—यहाँ तक कि गोमांस खानेवालों से भी बढ़कर पापी समझते हैं।

कोई भी बात न कहकर शचीश के मुँह की तरफ मैं देखता रहा उस समय भी मैंने देखा कि मुह पर वही ज्योति विराजमान है—मानो हृदय के अन्दर पूजा का प्रदीप जल रहा है

किसी दिन भी किसी के मन में ऐसा ख्याल नहीं आ सकता था कि मैं किसी जन्म में सोनार के साथ बैठकर भोजन करूँगा और नास्तिकता में मेरा कट्टरपन मेरे गुरु से भी आगे बढ़ जायगा। धीरे धीरे मेरे भाग्य में ये घटनाएँ भी घटीं।

हमारे कालेज में विलकिन्स साहब साहित्य के अध्यापक थे। उनकी जैसी विद्वत्ता थी छात्रों के प्रति उनकी वैसी ही अवज्ञा भी थी। इस देश के कालेजों में बंगाली लड़कों को साहित्य पढ़ाना शिक्षा-कार्य में कुली मजदूरों का काम करना है यही उनकी धारणा थी। इसीलिए मिल्टन और शेक्सपीयर रचित ग्रन्थों को पढ़ाते समय क्लासमें वे अंग्रेजी बिल्ली शब्द के लिए दूसरा शब्द मार्गारजातीय चतुष्पद बताते थे। किन्तु नोट लिखने के बारे में शचीशको उन्होंने माफी दे रखी थी वे कहते थे शचीश! तुमको इस क्लास में जो बैठना पड़ता है,

इसकी क्षतिपूर्ति मैं कर दूँगा तुम मेरे घर आ जाना वहाँ तुम्हारे मुँह का स्वाद मैं बदल सकूँगा।

छात्र दग होकर कहते साहब शचीश को इतना मानता है इसका कारण उसके शरीर का रग साफ होना ही है और वह साहब का मन घुमाने के लिए नास्तिकता का प्रचार करता है। उनमें से कुछ बुद्धिमान आडम्बर के साथ साहब के पास पॅाजिटिविज्म के सम्बन्ध में लिखी पुस्तकें मांगने के लिये गये थे—साहब ने कह दिया था तुमलोग समझ न सकोगे। वे लोग नास्तिकता की चर्चा करने में भी अयोग्य हैं इस बात से नास्तिकता और शचीश के विरुद्ध उनका क्षोभ केवल बढ़ता ही जा रहा था।

२

मत और आचरण के सम्बन्ध में शचीश के जीवन में जो जो निन्दा क कारण हैं उन सबका सग्रह करके मैंने लिख लिया। इसमें से कुछ उससे मेरी जान पहचान होने के पहले की बातें थीं और कुछ बाद की।

जगमोहन शचीश के बड़े चाचा थे। उस जमाने के वे

सुप्रसिद्ध नास्तिक थ। यह कहना कि वे ईश्वर में अविश्वास करते थे उनके बारे में थोड़ा ही कहना होगा—ईश्वर नहीं है इसी बात मे वे अविश्वास करते थे। जंगी जहाज के कप्तान को जहाज चलाने की अपेक्षा जहाज डुबा देना ही जैसे बड़ा काम होता है वैसे ही जहाँ भी सुविधा मिले वहीं पर आस्तिक धम को डुबा देना ही जगमोहन का धम था। ईश्वर में विश्वास करन वालों क साथ वे इसा पद्धति से तक करते थे।

यदि ईश्वर है तो मेरी बुद्धि उनकी ही दी हुई है। वही बुद्धि कह रही है कि ईश्वर नहीं है।

फिर भी तुम लोग उनक ही मुह पर जबाब देकर कह रहे हो कि ईश्वर है। इसी यादके दण्डमें ो तीस करोड़ देवता तुमलोगों क दोनों कान पकड़कर जुर्माना वसूल कर रहे हैं।

लड़कपन में ही जगमोहन का विवाह हो गया था। युवा वस्था में जब उनकी स्त्री मर गयी उसके पहल वे मैलूथस् पढ चुके थे। उन्होंने फिर विवाह नहीं किया।

उनके छोटे भाई हरिमोहन शचीश के पिता थे। अपने बड़े भाई के स्वभाव से उनका स्वभाव इतना भिन्न था कि उसका लिखने से लोग सन्देह करने लगेंगे कि कोई कहानी गढ़ी गयी है? किन्तु कहानियाँ ही लोगोंका विश्वास छीनने के लिए सावधान होकर चलती हैं सत्य क लिए ऐसा कोई झमेला नहीं है इसलिए सत्य अद्भुत होने से नहीं डरता। इसलिए प्रातःकाल और सायकाल जैस एक दूसरे से विप रीत हैं ससार में बड़े भाई और छोटे भाई भी ठीक उसी तरह एक दूसरे से विपरीत हैं ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है।

हरिमोहन बचपनमें बीमार रहा करते थे। शान्ति स्वस्त्ययन साधुवैरागियों की जटासे निचोड़ा हुआ जल विशेप विशेष तीर्थ स्थानों की धूलि अनेक जाग्रत प्रसाद और चरणामृत गुरु पुरोहितों से अनेक रुपयों के बदले में मिले आशीर्वाद के द्वारा उनको मानों सभी अकल्याणों से बचाकर किलेब दी करके रखा गया था।

उम्र अधिक होनेपर उनको और कोइ बीमारी नहीं रह गयी थी किन्तु वे इतने आलसी हो गये थे कि ससार से अपनी इस आदत को दूर न कर सके। किसी तरह वे बचे रहें इससे अधिक उनसे कोई कुछ और नहीं चाहता था। उन्होंन भी इस सम्बन्ध में किसी को निराश नहीं किया,खूब मजेमें जीवित रह गये। किन्तु शरीर माना अब गया तब गया इस तरह का भाव दिखाकर उन्होंने सभी को धमका रखा था। विशेष कर अपने पिता की थोड़ी ही उम्र में मृत्यु हो जान की नजीर के बल पर, उन्होंने अपनी मां और मौसी को समस्त सेवा और देखभाल करने के लिए अपनी ओर खींच लिया था। सबसे पहले वे भोजन करते सब लोगों से उनके भोजन की व्यवस्था स्वतन्त्र रहती सब लोगों से कम उनको काम करना पड़ता और सब लोगों से अधिक वे विश्राम करते थे। केवल मां और मौसी के ही नहीं, वरन् वे तो त्रैलोक्य के सभी देवताओं के विशेष सरक्षण में हैं इस बात को वे कभी नहीं भूलते थे। केवल देवी देवताओं को ही नहीं ससार मे जहाँ कहीं जिससे जिस परिमाण में सुविधाएँ मिल सकती हैं उसको वे उसी परिमाण में मानकर चलते थे। थाने के दारोगा धनवान पड़ोसी ऊँचे ओहदे के

राजकर्मचारी अखबार के सम्पादक सभी की वे यथोचित भक्ति करते थे—गो ब्राह्मणों की तो कोई बात ही नहीं थी।

जगमोहन का विचार ठीक इसके विपरीत था। वे किसीसे लेशमात्र भी सहायता की आशा नहीं करते हैं किसी तरह का जरा भी सन्देह कहीं किसी के मन में न उठ जाय इस भय से वे शक्तिसम्पन्न लोगों को अपने से दूर रखकर ही चलते थे। वे देवताओं को नहीं मानते थे इसमें भी उनका यही मनोभाव निहित था। लौकिक या अलौकिक किसी शक्ति के सामने वे हाथ जोड़ने को तैयार नहीं थे।

ठीक समय पर अर्थात् ठीक समय के बहुत पहले हरिमोहन का विवाह हो गया। तीन लड़कों और तीन लड़कियों के बाद शचीश का जन्म हुआ। सभी ने कहा कि बड़े चाचा के साथ शचीश का चेहरा आश्चर्यजनक रूप से मेल खा रहा है। जगमोहन ने भी उसपर इस तरह अधिकार कर लिया था मानो उनका अपना ही लड़का हो।

इसमें जितना लाभ था हरिमोहन पहले उतने का हिसाब लगाकर खुश थे। क्योंकि जगमोहन ने शचीश की पढ़ाई का भार अपने ही ऊपर ले लिया था। अंग्रेजी भाषा के असाधारण विद्वान के रूप में जगमोहन की प्रसिद्धि थी। कुछ लोगों के मतानुसार वे बंगाल के मैकॉले और कुछ लोगों के मत से वे बंगाल के जॉनसन थे। घोंघे की खोली की तरह मानो वे अंग्रेजी पुस्तकों से घिरे हुए थे। कंकड़ रोड़ों की रेखाओं को देखकर पहाड़ के ऊपर जिस तरह झरने का रास्ता पहिचाना जाता है उसी तरह मकान में किन-किन हिस्सों में उनकी गतिविधि होती है इसकी

पहिचान फर्श से लेकर छत तक अँग्रेजी पुस्तकों के ढर देखने से ही हो जाती थी।

हरिमोहन ने अपने बड़े लड़के पुरन्दर को स्नेह के रस से एकदम पिघला दिया था। वह जो कुछ माँगता था वे उसके लिए इनकार नहीं कर सकते थे। उसके लिए सदा ही उनकी आँखें मानो आँसुओं से भरी रहती थीं—उनको ऐसा मालूम होता था मानो किसी बात में बाधा डालने से वह बचेगा ही नहीं। उसकी पढ़ाई लिखाइ तो कुछ हुई ही नहीं—जल्दी जल्दी विवाह हो गया और उस विवाह के घेरे के अन्दर कोई भी उसे पकड़कर न रख सका। हरिमोहन की पुत्रवधू इसपर होहल्ला मचाकर आपत्ति प्रकट करती थी और—हरिमोहन अपनी पुत्र-वधू पर अत्यन्य क्रुद्ध होकर कहते थे कि घर में इसी के उपन्द्रव से उनके लड़के को बाहर सान्त्वना का रास्ता ढूंढना पड़ रहा है।

इन्हीं सब कारणोंको देखकर पितृस्नेह की विषम विपत्ति से शचीश को बचाने के लिये जगमोहन ने उसको अपने पास से जरा भी हटने नहीं दिया। शचीश देखते देखते कम अवस्था में ही अंग्रेजी लिखने में पक्का हो गया किन्तु इसी स्थान पर वह रुका नहीं। अपने मस्तिष्क में मिल बेन्थम का अग्निकाण्ड घटाकर वह मानो नास्तिकता के मशाल की भांति जलने लगा।

जगमोह शचीश के साथ इसतरह का बर्ताव करते थे मानो वह उनकी समान उम्रका ही हो। गुरुजनों के प्रति भक्तिभाव रखना अपने मत से वे एक झूठा संस्कार समझते थे क्योंकि यह मनुष्य के मन को गुलामी में पक्का कर देता है।

घर के किसी नये दामाद ने उनको श्री चरणेषु सम्बोधन करके चिट्ठी लिखी थी । इसपर उन्हाने ऐसे निम्नलिखित रूप से उसे उपदेश दिया था—भाई डियर नरेन चरण को श्री कहने से क्या कहा जाता है यह मैं भी नहीं जानता और तुम भी नहीं जानते, इसलिए यह निरथक शब्द है इसक अतिरिक्त मुझे एकदम ही छोड़कर तुमने मेरे चरणों में कुछ निवेदन किया है तुमको जान लेना चाहिये कि मेरा चरण मेरा ही एक अंश है जबतक वह मेरे साथ लगा हुआ है तबतक उसे अलग करक देखना उचित नहीं है इसके सिवा वह अश हाथ भी नहीं है, कान भी नहीं है उससे कुछ निवेदन करना पागलपन है इसके बाद अन्तिम बात यह है कि मेरे चरणों क सम्बन्ध में बहुवचन का प्रयोग करने से भक्ति प्रकट की जा सकती है क्योंकि कोई कोई चौपाये तुमलोगों क भक्तिभाजन हैं किन्तु इससे मेरी प्राणीतत्व सम्बन्धी जानकारी में तुम्हारी अज्ञानता का संशोधन कर देना मैं उचित समझता हूँ।

२

उन सभी विषयों पर शचीश के साथ जगमोहन आलोचना करते थे जिन्हें लोग साधारणत: दबा रखते हैं इस बात को लेकर यदि कोई आपत्ति करता तो वे कहते कि बर्रे

के छत्ते को उजाड़ देने से बर्रें खदेड़े जा सकते हैं उसी तरह इन सब बातों में लज्जा करना हटा देने से ही लज्जा का कारण हटाया जाता है शचीश के मन से मैं लज्जाका निवास-स्थान हटा दे रहा हूँ।

लिखना पढ़ना जब पूरा हो गया तब हरिमोहन शचीशको बड़े चाचा के हाथ से उद्धार करने के लिए जीजान से लग गये। किन्तु कील उस समय तक गले में बँध चुकी थी फँस चुकी थी—इसलिए एक तरफ का खिंचाव जितना ही प्रबल होता गया दूसरी तरफ का बन्धन भी उतना ही प्रबल होता गया। इस हालत में हरिमोहन लड़क की अपेक्षा अपने बड़ भैया पर ही अधिक क्रोध करने लगे। भैया के सम्बन्ध में तरह तरह की निन्दा से मुहल्ले को उन्होंने भर दिया।

यदि केवल मत या विश्वास की बात रहती तो हरिमोन आपत्ति न उठाते। मुर्गी खाकर लोक-समाज में बकरा कहकर उसका परिचय देने पर भी वे सह लेते किन्तु ये लोग इतनी दूर चले गये थे कि झूठ की मदद से भी इनलोगों को छुट-कारा देने का उपाय नहीं था।

जिस बात से सबसे अधिक चोट लगी उसका वर्णन कर रहा हूँ:—

जगमोहन के नास्तिक धर्म का एक प्रधान अंग था लोगों की भलाई करना। इस भलाई करने में और जो भी रस हो, पर एक प्रधान रस यह था कि नास्तिकों के लिए लोगों की भलाई करने में केवल अपने नुकसान के सिवा और कुछ भी नहीं है—उसमें न तो कोई पुण्य है न तो पुरस्कार है, न तो किसी देवता या शास्त्र के पुरस्कार का विज्ञापन या

आख दिखाना ही है। यदि कोई उनसे पूछता कि प्रचुरतम लोगों के प्रभूततम सुखसाधन में आपकी क्या गरज है? तो वे कहते कुछ भी गरज नहीं है और यही मेरी सबसे बड़ी गरज है। वे शचीश से कहते देखना भैया हमलोग नास्तिक हैं और उसी की लपेट में हमलोगों को एकदम निष्कलक और निमल होना पड़ेगा। हमलोग कुछ भी नहीं मानते इसीलिए अपने को मानने का जोर अधिक रखते हैं।

प्रचुरतम लोगों के प्रभूततम सुखसाधन म उनका प्रधान चेला था शचीश। मुहल्ले में चमड़ का कई बड़ी आदत थीं। वहाँ के मुसलमान व्यापारियों और चमारों को लेकर चचा भतीजे एक साथ मिलकर इसप्रकार के घनिष्ठ हितानुष्ठान में लग गये कि हरिमोहन की तिलक मुद्रा अग्निशिखा की तरह जलकर उनके मस्तिष्क में लका काण्ड मचाने का उप क्रम करने लगी। भैया क सामने शास्त्र या अविचार विचार की दोहाई देने से उलटा काम निकलेगा इसलिए उनके सामने उन्होंने पैतृक सम्पत्ति के अनुचित अपव्यय का अभियोग उठाया। भैया ने कहा तुम मोटी तोंदवाले पण्डे पुरोहितों के लिए जितने रुपये खच कर चुके हो मेरे खर्च की मात्रा पहले वहाँ तक तो उठ जाने दो फिर उसके बाद तुम्हारे साथ हिसाब किताब का समझौता हो जायगा।

घर के लोगों ने एक दिन देखा कि मकान के जिस हिस्से में जगमोहन रहते हैं उसमें एक बड़े भोज की तैयारी हो रही है। उसमें रसोइयों और परिवेशकों में सभी मुसलमान हैं। हरिमोहन ने क्रोध से घबड़ाकर शचीश को बुलाकर कहा तू क्या आज अपने सब चमार बन्धुओं को बुलाकर इस मकान में खिलाने जा रहा है?

पुरन्दर क्रोधित होकर छटपटाता हुआ चक्कर काट रहा था कह रहा था मैं देखूँगा किस तरह वे लोग इस मकान में आकर भोज खाते हैं ।

हरिमोहन ने भैया क सामन आपत्ति प्रकट की तो जग मोहन ने कहा तुम अपन देवता को रोज ही भोग चढ़ाते हो तो मैं कुछ भी नहीं कहता अपने देवताओं को मैं एक दिन भोग चढ़ाऊ गा इसमें तुम रुकावट मत डालो ।

तुम्हारे देवता ?

हाँ मेरे देवता ?

तुम क्या ब्राह्म हो गये हो ?

ब्राह्म लोग निराकार मानते हैं, उसे आखों से देखा नहीं जाता। तुमलोग साकार मानते हो उसको कान से सुना नहीं जाता। हमलोग सजीव को मानते हैं उसे आँखों से देखा भी जाता है और कानों से सुना जाता है—उसपर विश्वास किये बिना तो रहा ही नहीं जा सकता।

ये चमार और मुसलमान तुम्हारे देवता हैं ?

हाँ ये चमार मुसलमान मेरे देवता हैं। इसकी एक आश्चयजनक यह शक्ति तुम देख लोगे कि इनके सामने भोग की सामग्री रखने पर ये अनायास ही उसे हाथों स उठाकर खा जायँगें। तुम्हारे देवताओं में से एक भी ऐसा नहीं कर सकता। मैं इस आश्चयजनक रहस्य को देखना पसन्द करता हूँ इसलिए अपने देवता को अपने घर बुलाया है— देवता को पहचानने में तुम्हारी आँखें यदि अभी न होतीं तो तुम खुश होते।

पुरन्दर ने अपने बड़ चाचा के पास जाकर खुद गला

फाड़ फाड़ कर कड़ी कड़ी बातें कहीं और उन्हें सूचना देदी कि यह एक भयङ्कर काण्ड कर डालेगा।

जगमोहन ने हंसकर कहा अरे बन्दर मेरे देवता कितने बड़े जाग्रत देवता हैं यह तो तू उनके शरीर पर हाथ लगाते ही समझ जायगा मुझे कुछ भी न करना पड़ेगा।

पुरन्दर चाहे जितनी हीं शेखी हांकता फिरे परन्तु वह अपने बाबूजी से भी अधिक डरपोक है। जहाँ पर उसका दाव लगता है वहीं पर उसका जोर चलता है। मुसलमान पड़ोसियों से छेड़छाड़ करने का साहस उसे नहीं हुआ। शचीश के पास गया और उसे गालियाँ देने लगा। शचीश अपनी आश्चयपूर्ण आखों से भाई के मुँह की तरफ ताकता रहा—एक बात भी उसने अपने मुह से नहीं निकाली। उस दिन का भोज निर्विघ्न समाप्त हो गया।

४

इसबार हरिमोहन कमर कसकर भैया के विरुद्ध लग गये। जिसके सहारे इनलोगों के परिवार का खर्च चलता है वह देवोत्तर सम्पत्ति है। जगमोहन विधर्मी और आचारभ्रष्ट हैं, इस कारण वे सर्वाधिकारी होने के योग्य

नहीं हैं। इसी बातको लेकर हरिमोहन ने जिले की अदालत में मुकदमा दाखिल कर दिया। नामी गिरामी गवाहों की कमी नहीं थी—मुहल्ले भर के लोग गवाही देने को तैयार थे।

अधिक कौशल करने की आवश्यकता नहीं हुई। जगमोहन ने अदालत में स्पष्ट स्वीकार कर लिया कि वे देवी देवताओं में विश्वास नहीं करते खाद्य अखाद्य का विचार नहीं करते मुसलमानों की उत्पत्ति ब्रह्मा के किस अंग से हुई है इस बात को वे नहीं जानते और उनके साथ बैठकर खाने पीने में उनको कोई भी आपत्ति नहीं है।

मुन्सिफ ने फैसले में जगमोहन का मदीनिरागी पद के लिए अयोग्य करार दिया। जगमोहन के पक्ष के कानूनदाँ वकीलों ने आश्वासन दिया कि यह फैसला हाईकोर्ट में टिक न सकेगा। जगमोहन ने कहा मैं अपील नहीं करूंगा। जिस देवता को मैं नहीं मानता उसे भी मैं धोखा नहीं दे सकता। देवता को मानने लायक बुद्धि जिनके पास है देवता को वंचना करने लायक धर्मबुद्धि भी उन्हीं लोगों में है।

मित्रों ने पूछा खाओगे क्या?

उन्होंने कहा, कुछ खाने को न जुटेगा तो हवा ही खाऊँगा।

इस मुकदमे को जीतकर उछल कूद मचाने की इच्छा हरिमोहन की नहीं थी। उसको यह भय था कि पीछे भैया के अभिशाप से कहीं कोई कुफल प्रकट न हो जाय। किन्तु पुरन्दर उस दिन चमारों को घर से खदेड़ न सका था, उसी की आग उसके मन में जल रही थी। किसके देवता जाग्रत हैं, इसबार तो यह प्रत्यक्ष ही दिखाई पड़ा।

इसलिए पुरन्दर ने खूब तड़के से ही ढोल मजीरा मगाकर मुहल्ले को सिर पर उठा लिया। जगमोहन के यहाँ उनका एक मित्र आया था। वह कुछ जानता नहीं था—उसने पूछा मामला क्या है जी? जगमोहन ने कहा आज मेरे देवता का धूमधाम के साथ विसर्जन होरहा है इसीलिए यह बाजागाजा है। दो दिनों तक स्वयं उद्योग करके पुरन्दर ने ब्राह्मण भोजन करा दिया। पुरन्दर ही केवल इस वंश का कुल प्रदीप है सभी इसकी घोषणा करने लगे।

दोनों भाइयों में बटवारा हो जाने पर कलकत्ते के मकान के बीचोबीच एक दीवार खड़ी कर दी गयी।

धर्म के सम्बन्ध में जैसी भी बात क्यों न हो पर खाने पहिनने और रुपये पैसे के बारे में मनुष्य में एक तरह की स्वाभाविक सुबुद्धि है इसीलिए मनुष्य जाति के प्रति हरिमोहन के मन में श्रद्धा था। उन्होंने विस्मित रूप से समझ लिया था कि उनका लड़का इस बार दरिद्र जगमोहन को छोड़कर कम से कम भोजन का गन्ध से उनके सोने के पिंजड़े में आ जायगा। किन्तु बाप का धर्मबुद्धि और कर्मबुद्धि में से एक को भी प्राप्त नहीं किया है इसी बात का शचीश ने परिचय दिया। वह अपने बड़े चाचा के ही साथ रह गया।

जगमोहन को चिरकाल से शचीश को इस तरह अत्यन्त अपना समझते रहने का अभ्यास पड़ गया था। आज इस बटवारे के दिन शचीश जो उनके अपने हिस्से में पड़ गया इसमें उन्हें कुछ भी आश्चर्य नहीं प्रतीत हुआ।

किन्तु हरिमोहन अपने भैया को अच्छी तरह पहचानते थे। वे लोगों में यह प्रचार करने लगे कि शचीश को रोक

कर जगमोहन अपने अन्नवस्त्र की व्यवस्था करने की चाल चल रहे हैं। उन्होंने अत्यन्त साधुभाव एवं अश्रु पूर्ण नेत्रों से सबसे कहा, क्या मैं भैया को खाने पहिनने का कष्ट दे सकता हूँ किन्तु मेरे लड़के को अपने हाथ में रखकर भइया जो शैतानी चाल चल रहे हैं वह तो मैं किसीप्रकार भी न सहूंगा। देखता हूँ कि वे कितने बड़े चालाक हैं।

यह बात मित्रों के परस्पर वार्तालाप से बढ़ते बढ़ते जब जगमोहन के कानों तक पहुंची तो वे एकाएक चौंक उठे। ऐसी बात उठ सकती है यह उन्होंने कभी सोचा ही नहीं था। इसलिए वे अपने आपको नासमझ कहकर धिक्कारने लगे। शचीश से उन्होंने कहा, गुडबाई शचीश।

शचीश समझ गया कि जिस वेदना से जगमोहन ने इस विच्छेद वाणी का उच्चारण किया है उसपर से और कोई बात नहीं चल सकती। आज तक से लेकर अठारह साल के अविच्छिन्न सम्बन्ध से शचीश को विदा ग्रहण करनी पड़ी।

शचीश जब अपना बक्स और बिछौना गाड़ी पर लादकर उनके पास से चला गया तब जगमोहन दरवाजा बन्द करके अपने कमरे में फर्श पर लेट गये। सन्ध्या हो गयी थी। उनके नौकर ने कमरे में बत्ती जलाने के लिए दरवाजा खटखटाया पर उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

हायरे प्रचुरतम मनुष्यों का प्रभूततम सुखसाधन! मनुष्य के सम्बन्ध में विज्ञान की माप काम नहीं आ सकती। मास्तिष्क गणना में जो मनुष्य केवल एक ही है हृदय के अन्दर वह तो अभी गणनाओं के परे है। शचीश को

क्या एक दो या तीन के कोठे में रख छोड़ा जा सकता है? व्यसन तो जगमोहन के हृदय को विदीर्ण कर सारे संसार को असीमता से भर दिया है।

शचीश ने किसलिए गाड़ी मँगवाकर उसपर अपना माल असबाब लाद दिया इसके बारे में जगमोहन ने उससे कुछ भी नहीं पूछा। मकान के जिस हिस्से में उसके पिता रहते थे उस तरफ शचीश नहीं गया। वह अपने एक मित्र के पास मेस में चला गया। अपना लड़का किसतरह ऐसा पराया हो जा सकता है यह बात स्मरण करके हरिमोहन बार २ आँसू गिराने लगे। उनका हृदय अत्यन्त कोमल था।

मकान का बटवारा हो जाने के बाद पुरन्दर ने जिद करके अपने हिस्से में देवता की प्रतिष्ठा करायी और सवेरे तथा शाम को शंख घन्टों की आवाज से जगमोहन के कान भन्ना उठते होंगे यही कल्पना करता हुआ वह उछलता रहता।

शचीश ने एक प्राइवेट ट्यूशन ठीक कर लिया और जगमोहन ने एक हाई स्कूल की हेडमास्टरी जुटा ली। हरिमोहन और पुरन्दर इस नास्तिक शिक्षक के हाथ से भले घरों के लड़कों को बचाने की चेष्टा करने लगे।

५

कुछ दिनों के बाद एक दिन शचीश दो मंजिले पर जगमोहन के पढ़ने के कमरे में जा पहुँचा। इन लोगों में प्रणाम करने की प्रथा नहीं थी। जगमोहन ने शचीश को आलिंगन करके चौकी पर बैठाया। बोले क्या समाचार है ?

एक विशेष समाचार है।

ननीबाला ने अपनी विधवा माँ के साथ अपने मामा के घर आश्रय लिया था। जितने दिनों तक उसकी माँ जीवित थी किसी तरह की विपत्ति उसपर नहीं आयी। कुछ ही दिन हुए उसकी माता का देहान्त हुआ है। ममेरे भाई सभी दुश्चरित्र हैं। उन्हीं लोगों का एक मित्र ननीबाला को उसके आश्रय स्थान से निकाल ले गया था। कुछ दिनों के बाद ननी के चरित्र पर उसके मन में स देह होने लगा और इसी डाह से वह उसको इतना तग करने लगा कि जिसका कोई ठिकाना नहीं। जिस मकान म शचीश मास्टरी करता है उसके पास वाले मकान में ही यह काण्ड हुआ है। शचीश इस अभागिनी का उद्धार करना चाहता है। किन्तु उसके पास न तो रुपये पैसे हैं और न तो कोई घर द्वार इसीलिए वह अपने बड़े चाचा के पास आया है। इधर उस लड़की को सन्तानोत्पत्ति की भी सम्भावना है।

जगमोहन तो एकदम आग बबूला हो गये। वह पुरुष मिल जाता तो तुरन्त ही उसका सिर चूरचूर कर डालते उनके मन में ऐसा ही भाव उत्पन्न हो गया। वे इन सब मामलों में सब तरफ से सोच विचार करने वाले आदमी नहीं हैं। झटपट बोल उठे, अच्छी बात है मेरी लाइब्ररी का कमरा खाली है उसी में मैं उसे ठहरने की जगह दूँगा।

शचीश ने आश्चर्य में पड़कर कहा लाइब्ररी वाला कमरा! किन्तु पुस्तक?

जितने दिनों तक काम नहीं मिला था कुछ कुछ पुस्तकें बेचकर जगमोहन अपना दिन बिताते रहे। अब थोड़ी बहुत जो कुछ पुस्तकें बची हुई हैं वे सोने के कमरे में अट जायगी।

जगमोहन ने कहा उस लड़की को इसी समय ले आओ।

शचीश ने कहा उसे ले आया हूँ वह नीचे कमरे में बैठी हुई है।

जगमोहन ने नीचे उतर कर देखा कि सीढ़ी के पास वाले कमरे में कपड़ों की एक गठरी की भाँति अवसन्न होकर लड़की एक कोने में जमीन पर बैठी हुई है।

जगमोहन तूफान की तरह कमरे में घुसकर मेघ सदृश गम्भीर स्वर से बोल उठे—आओ मेरी बेटी आओ! धूल में क्यों बैठी हुई हो?

अपना मुह आंचल दबाकर वह फूट फूट कर रोने लगी।

जगमोहन की आँखों में सहज ही आंसू नहीं आते। पर उनकी आँखें आसू से छलाछला उठीं। उन्होंने शचीश से कहा शचीश यह लड़की आज जिस लज्जा को ढो रही है वह मेरी ही लज्जा है। अहा! इसपर इतना बड़ा बोझ किसने लाद दिया?

बेटी मेरे निकट लज्जा करने से काम न चलेगा—मेरे स्कूल के लड़के मुझे पगला जगाई कहते थे—आज भी मैं वही पागल हूँ। यह कहकर जगमोहन ने निःसकोच भाव से लड़की के दोनों हाथ पकड़कर उसे खड़ी कराया—माथे पर से उसका घू घट खिसक गया।

अत्यन्त सुकमार मुखड़ा अवस्था कम मुह पर कलक का कहीं कोई भी चिन्ह नहीं। फूल पर धूल पड़ जाने से भी जैसे उसकी आन्तरिक पवित्रता नष्ट नहीं होती वैसे ही इस सिरिस फूल जैसी लड़की की आभ्यन्तरिक पवित्रता का लावण्य भी तो दूर नहीं हुआ है। उसकी दोनों काली आंखों में आहत हरिणी की भाँति भय दिखाई पड़ रहा है समस्त देहलता में लज्जा का संकोच भरा है किन्तु इन सभी सकरुणताओं के बीच कालिमा तो कहीं भी नहीं है।

ननीबाला को अपने ऊपर वाले कमरे में ले जाकर जगमोहन ने कहा बेटी यह देखो मेरे घर की श्री। सात जन्मों से इनमें कभी झाडू नहीं लगा है सभी इधर उधर अस्त-यस्त पड़ा है और यदि मेरी बात पूछती हो तो कब खाता हूँ, कब नहाता हूँ इसका कोई ठिकाना नहीं। तुम आ गई हो अब मेरे घर की श्री लौटेगी और पगला जगाई भी मनुष्य की तरह हो जायगा।

मनुष्य मनुष्य का कितना हो सकता है इसका अनुभव आज से पहले ननीबाला को नहीं हुआ था—यहाँ तक कि माँ की जिन्दगी में भी नहीं। क्योंकि माँ तो उसको लड़की के रूप में देखती नहीं थी विधवा लड़की के रूप में देखती थी—उस सम्बन्ध का रास्ता आशंकाओं के छोटे छोटे कांटों से भरा हुआ था। किन्तु जगमोहनने सम्पूर्ण अपरचित होते हुए ननीबाला को

उसकी समस्त बुराइया और भलाइयों का आवरण भेद कर ऐसे परिपूर्ण रूप से किसतरह ग्रहण कर लिया ?

जगमोहन ने एक बुढ़ी दासी को लगा दिया ताकि ननी बाला को कहीं पर कुछ भी सकोच न हो। ननीको बड़ा भय था कि जगमोहन उसके हाथ का खाना खायेंगे या नहीं—वह तो पतिता है। किन्तु बात ऐसी हुई कि जगमोहन उसके हाथ के सिवाय दूसरे क हाथ से खाना ही नहीं चाहते थे—वह स्वय पकाकर पास बैठकर जबतक खिलाने नहीं बैठती तबतक वे भोजन नहीं करेंगे यही उनका प्रण था।

जगमोहन जानते थे कि इस बार एक बहुत बड़ी नि दा की बात आ रही है। ननी भी यह बात समझती थी और इसके लिए उसक भय का अ त नहा था। वह दो चार दिनों में ही शुरू हो गया। दासी पहले सभझती थी कि ननी जगमोन की लड़की है—उसने एक दिन आकर ननी को क्या क्या अण्ड सण्ट कह डाला और घृणा से नौकरी छोड़कर चली गयी। जगमोहन की बात सोचकर ननी का मुह सूख गया। जगमोहन ने कहा, बेटी मेरे घर में पूर्णच द्र का उदय हुआ है इसीलिए निन्दा में अमावस्या पूर्णिमा की बाद बुलाने का समय आया है—किन्तु लहरें जितनी ही मैली क्यों न हों ज्योत्स्ना में तो दाग लगगा नहीं।

जगमोहन की एक बूआ हरिमोहन के घर से आकर बोलीं, छिः छि कैसा काण्ड है जगाई ? पाप को विदा कर दे।

जगमोहन ने कहा तुम लोग धार्मिक हो तुम लोग ऐसी बात कह सकती हो कि तु यदि मैं पाप को विदा कर दूँगा तो पापी की क्या गति होगी।

किसी रिश्ते की एक नानी ने आकर कहा लड़की को अस्पताल में भेज दो हरिमोहन सब खर्च देने को तैयार हैं।

जगमोहन ने कहा रुपये की असुविधा हुई है इसीलिए क्या माता को खामखा अस्पताल भेज दूँ? हरिमोहन यह कैसी बात कहता है?

नानी ने गाल पर हाथ रखकर कहा मा किसको कहता है रे? जगमोहन ने झट उत्तर दिया जो जीव को गर्भ में धारण करती हैं उनको जो प्राण को संकट में डालकर बालक उत्पन्न करती हैं उनको। उस बच्चेके पाखण्डी बाप को तो मैं पाप नहीं कहता। वह तो केवल विपत्ति लाता है उसको तो कोई विपत्ति हा नहीं है।

हरिमोहन का समूचा शरीर माना घृणा के पसीने से तर हो गया। गृहस्थ घर की दीवार क उस पार ही बापदादे की जमीन पर एक भ्रष्टा लड़की इसतरह रहेगी यह कैसे सहा जा सकता है?

इस पाप में शचीश घनिष्ठता के साथ लिप्त है और उसका नास्तिक चाचा इसमें उसे प्रश्रय दे रहा है, इस बात पर विश्वास करने में हरिमोहन का जरा भी द्विधा या देर नहीं हुई। विषम उत्तेजना के साथ वे इस बात का घूम घूमकर प्रचार करने लगे।

यह अनुचित निन्दा जरा कम हा जाय इसके लिए जग मोहन ने किसीतरह की चेष्टा नहीं की। उन्होंने कहा, हमारे नास्तिकों के धर्मशास्त्र में भले कामों की निन्दा का विधान नरकभोग है—जन श्रुति जितने ही नये नये रगों में नया नया रूप धारण करने लगी शचीश को लेकर वे उतने ही उच्च हास्य के साथ आनन्द सम्भोग करने लग। इस तरह की कुत्सित

बात को लेकर भतीजे क साथ ऐसा काण्ड करना हरिमोहन था उनकी तरह किसी दूसरे भले आदमी न किसी दिन नहीं सुना था।

जगमोहन मकान क जिस हिस्से में रहते थे बटवारा होने के बाद पुरन्दर न उसकी छाया तक का स्पर्श नहीं किया। उसने प्रतिज्ञा की कि पहले वह उस लड़की को मुहल्ले से खदेड़ देगा तब फिर कोई दूसरी बात होगी।

जगमोहन जब स्कूल जाते तब अपन मकान म प्रवेश करने में सभी रास्ते खूब अच्छी तरह बन्द करके जाते थे और ज्योंही जरा भी छुट्टी की सुविधा पाते एक बार उसे देख जाने में नहीं चूकते थे।

एक दिन दोपहर क समय पुरन्दर अपने तरफ की एक छत की दीवार पर सीढ़ी लगाकर जगमोहन के खण्ड में कूद पड़ा। उस समय भोजन करने के बाद ननीबाला अपने कमरे में सो रही थी—दरवाजा खुला ही था।

कमरे में घुसकर निद्रामग्न ननी को देखकर ननी ने आश्चर्य और क्रोध से गरजते हुए कहा—हूँ! तू यहा पर!

जाग उठने पर पुरन्दर को देखते ननी का मुँह एक दम पीला पड़ गया। भाग जाने या मुँह से कोई बात निकालने लायक शक्ति उसमें नहीं रह गयी। पुरन्दर ने क्रोधसे कापते काँपते पुकारा—ननी—ननी! ठीक उसी समय पीछे से जगमोहन कमरे में प्रवेश करक चिल्ला उठे निकल जा मेरे घर से निकल जा।

पुरन्दर क्रुद्ध बिल्ली की तरह गुर्राने लगा। जगमोहन ने कहा यदि न निकलोगे तो मैं पुलिस बुलाऊँगा। पुरन्दर एक बार ननी की तरफ अग्नि कटाक्ष फेंककर चला गया।

ननी मूर्छित हो गयी।

जगमोहन समझ गये कि मामला क्या है। उन्होंने शचीश को बुलाकर पूछा तो हाल मालूम हो गया। शचीश को यह बात मालूम थी कि पुरन्दर ने ही ननी को नष्ट किया है पीछे क्रोध में पड़कर वे कहीं होहल्ला न मचाने लगें इसीलिए उनसे कुछ भी नहीं बताया था। शचीस मन ही मन यह समझता था कि कलकत्ता शहर में और कहीं भी पुरन्दर के उपद्रव से ननी का निस्तार नहीं है एकमात्र बड़े चाचा का ही मकान ऐसा है जहाँ वह कभी अपने जीवन में पदार्पण न करेगा।

ननी एकप्रकार के भय की हवा में कई दिनों तक बाँस की पत्तियों की तरह कापती रही। इसके बाद उसने मृत सन्तान प्रसव किया।

पुरन्दर ने एक दिन आधी रात को लात मारकर ननीको घर से निकाल दिया था। उसके बाद बहुत खोज करने पर भी उसे नहीं पा सका। ठीक ऐसे समय में बड़े चाचा के मकान में उसे देखकर ईर्षा की आग से उसका शरीर सिर से पैर तक जलने लगा।

उसके मन में यह धारणा हुई कि शचीश ने अपने भोग के लिए ननी को उसके हाथ से छीन लिया है उसपर से पुरन्दर को ही विशेषरूप से अपमानित करने के लिए उस लड़की रो एकदम ही उसके मकान के ठीक पास ही लाकर रखा है। यह तो किसी तरह भी सहने योग्य नहीं है।

यह बात हरिमोहन को भी मालूम हो गयी। इसकी हरिमोहन को जानकारी करा देने में पुरन्दर को जरा भी लज्जा नहीं थी। पुरन्दर की इन सब दुष्कृतियों के प्रति उनके मन में एक तरह का स्नेह ही था।

शचीश अपन भाइ पुरन्दर के हाथ से इस लड़की को छीन ले यह उनको बहुत ही अशास्त्रीय और अस्वाभाविक मालूम हुआ। पुरन्दर इस असहनीय अपमान और अन्याय से अपनी प्राप्य वस्तु का उद्धार कर लगा यही उसके एकान्त मन का संकल्प हो उठा। तब अपने अपने ही रुपय की मदद से ननी की एक नकली मां लाकर खड़ी कर दी और उसे जगमोहन क पास रोने धोने क लिए भेज दिया। जगमोहन ने ऐसी भीषण मूर्ति धारण करक उसे खदेड़ दिया कि वह फिर उस तरफ गयी ही नहीं।

ननी दिन पर दिन म्लान होने लगी मानों छाया की भांति विलीन हो जाने की तैयारी कर रही हो। उस समय क्रिसमस की छुट्टी थी। जगमोहन क्षणमात्र के लिए भी ननी को छोड़ कर बाहर नहीं जाते थे।

एक दिन सन्ध्या क समय वे उसको स्काट की एक कहानी बंगला में अनुवाद करके सुना रहे थे कि उसी समय पुरन्दर एक दूसरे युवक को साथ लिये तूफान की भांति कमरे में घुस आया। वे जबतक पुलिस बुलाने की तैयारी कर रहे थे तब तकवह युवक बोल उठा मैं ननी का भाई हूँ मैं इसको ले जाने के लिए आया हूँ।

जगमोहन ने उसका कुछ भी उत्तर न देकर पुरन्दर को गरदनिया देकर ठेलते ठेलते सीढ़ी के पास तक ले जाकर एक धक्के में नीचे की ओर रवाना करा दिया। उन्होंने उस दूस युवक से कहा पापी, तुमको लज्जा नहीं आती ? ननी की रक्षा करते समय तुम कोई भी नहीं थे और सर्वनाश करते समय तुम ननी के भाई बनते हो।

उस युवक ने वहां से चले जाने में देर नहीं की किन्तु दूर

से चिल्लाकर कहता गया कि पुलिस की मदद से वह अपनी बहिन को उद्धार करके ले जायगा। यह युवक वास्तव में ननी का भाई था। शचीश ही ननी को पतिता बनाने का कारण है यही प्रमाणित करने के लिए पुरन्दर उसे बुलाकर ले आया था।

ननी मन ही मन कहने लगी पृथ्वी तुम दोनों भागों में बट जाओ।

जगमोहन ने शचीश को बुलाकर कहा ननी को मैं साथ लेकर पश्चिमी भारत के किसी शहर में जा रहा हूँ—वहाँ यथासम्भव कुछ न कुछ बन्दोबस्त कर लूंगा—जैसा उपद्रव शुरू हुआ है यहाँ रहने से यह लड़की न बचेगी।

शचीश ने कहा, जब भैया पीछे पड़े हुए हैं तब जहाँ भी जाइयेगा उपद्रव साथ साथ चलेगा।

तब उपाय क्या है ?

उपाय है। मैं ननी से विवाह कर लूँगा।

विवाह करोगे ?

हाँ सिविल विवाह के कानून के अनुसार।

जगमोहन ने शचीश को छाती से लगा लिया। उनकी आँखों से झरझर आँसू बहने लगे। इस तरह का अश्रुपात उन्होंने अपने जीवन में कभी नहीं किया था।

६

मकान का बटवारा हो जाने के बाद हरिमोहन एक दिन भी जगमोहन को देखने के लिए नहीं आये। उस दिन रुच और अस्तव्यस्त हालत मे ही आ गये। बोले, भैया सर्वनाश की यह कैसी बात सुन रहा हूँ ?

जगमोहन ने कहा, सर्वनाश होने की ही बात थी अब उससे बचने का उपाय हो रहा है।

भैया शचीश तुम्हारे लड़के के समान है—उसके साथ तुम इस पतिता लड़की का विवाह करोगे ?

शचीश को मैंने अपने लड़के की ही तरह पालन पोषण कर मनुष्य बनाया है—आज मेरा वह परिश्रम सार्थक हो गया। उसने हमारा मुँह उज्ज्वल कर दिया।

भैया, मैं तुमसे हार मान रहा हूँ—अपनी आमदनी का आधा हिस्सा मैं तुम्हारे नाम लिख देता हूँ मुझसे ऐसा भयकर बदला मत लो।

जगमोहन कुर्सी छोड़कर उठ खड़े हुए और बोले क्या ! तुम अपने जूठे पत्तल का आधा देकर मुझे कुत्ते की तरह फुसलाने आये हो ? मैं तो तुम्हारी तरह धार्मिक नहीं हूँ मैं नास्तिक हूँ यह बात याद रखना—मैं क्रोध का बदला भी नहीं लेता और अनुग्रह की भिक्षा भी नहीं लेता।

हरिमोहन शचीश के मेस में जाकर उपस्थित हुए। उसे एकान्त में बुलाकर उन्होंने कहा—यह क्या सुन रहा हूँ ? तुझे क्या मरने के लिए कहीं जगह नहीं मिली ? इस तरह कुलमें कलंक लगाने को तैयार हो गया ?

शचीश ने कहा कुल का कलंक मिटाने के लिए ही मेरी यह चेष्टा है नहीं तो विवाह करने का मुझे कोई शौक नहीं है।

हरिमोहन ने कहा तुमको क्या जरा भी धर्मज्ञान नहीं है ? वह लड़की तेरे भाई की स्त्री के समान है उसे तू—

शचीश ने बीच में रोककर कहा स्त्री के समान ? ऐसी बात मुँह से मत निकालियेगा।

इसके बाद जो भी मुँह से निकला वही कहकर हरिमोहन शचीश को गाली देने लगे। शचीश ने कोई उत्तर नहीं दिया।

हरिमोहन पर अब यह एक नयी आफत आ पड़ी है कि पुरन्दर निर्लज्ज की भांति घूम घूमकर कह रहा है यदि शचीश ननी से विवाह कर लेगा तो वह आत्महत्या कर के प्राण दे डालेगा। उधर पुरन्दर की स्त्री का कहना है कि ऐसा हो जाय तो बला दूर हो जायगी किन्तु यह तो तुम्हारी सामर्थ्य के बाहर की बात है। हरिमोहन पुरन्दर की इस धमकी में पूरा विश्वास करते हों ऐसी बात नहीं किन्तु उनका भय दूर नहीं हो रहा था।

शचीश इतने दिनों तक ननी से दूर ही दूर रहता आया था। एकान्त में तो एक दिन भी उससे भेंट नहीं हुई। यहाँ तक कि उससे दो चार बातें भी हुईं या नहीं इसमें सन्देह है। विवाह की बात जब पक्की हो गयी तब जगमोहन ने शचीश से कहा विवाह के पहले एकान्त में एक दिन ननी से अच्छी तरह बातचीत कर लो एक बार दोनों को एक दूसरे

क मन से परिचित हो जाना आवश्यक है।

शचीश राजी हो गया।

जगमोहन ने दिन नियत कर दिया। ननी से उन्होंने कहा बेटी आज तुमको मेरी रुचि के अनुसार अपनी सजावट करनी पड़गी।

ननी ने लज्जा के मारे सिर झुका लिया।

नहीं बेटी लाज करने से काम न चलेगा। मेरी आन्तरिक साध है कि आज तुम्हारी सजावट देख लूँ—मेरी यह इच्छा तुमको पूरी कर देनी पड़ेगी।

यह कहकर चुनी हुई बनारसी साड़ी अँगिया और ओढ़ने की चादर जिन्हें वे अपनी पसन्द से खरीद ले आये थे ननी क हाथ में दे दिये।

ननी ने जमीन पर लेटकर उनकी चरण धूलि लेकर प्रणाम किया। घबड़ा कर अपने पैर खींचते हुए बोले इतने दिन हो गये तो भी मैं तुम्हारे मन से भक्ति दूर न कर सका। उम्र में भले ही मैं बड़ा हूँ किन्तु बेटी तुम तो माता होने के नाते मुझसे भी बड़ी हो।—यह कहकर उसका मस्तक चूम कर वे बोले—भवतोष क घर से मुझे निमन्त्रण मिला है लौटने में कुछ रात हो जायगी।

ननी ने उसका हाथ पकड़कर कहा बाबूजी आज तुम मुझे आशीर्वाद दो।

बेटी मैं तो यह स्पष्ट ही देख रहा हूँ कि इस वृद्धावस्था में तुम इस नास्तिक को आस्तिक बना लोगी। आशीर्वाद में तो मैं पैसा भर विश्वास नहीं करता किन्तु तुम्हारा यह मुँह देखने पर मुझे आशीर्वाद देने की इच्छा हो रही है।

यह कहकर ननी की ठुड्डी पकड़ कर उसका मुँह कुछ

ऊपर उठाकर चुपचाप कुछ देर तक वे उसकी ओर देखते रह गये—ननी क दोनों नेत्रों से अविरल आसू गिरने लगे।

शाम को आदमी दौड़ता हुआ भावतोष के घर गया और जगमोहन को बुलाकर ले गया। उन्होंने आकर देखा कि बिस्तर पर ननी की लाश पड़ी हुई है। वे जो कपड़े उसे दे गये थे उन्हें ही पहिने है—हाथ में एक चिट्ठी है सिरहाने शचीश खड़ा है। जगमोहन ने चिट्ठी खोलकर देखा तो उस में लिखा था—

बाबूजी आज्ञा पालन न कर सकी मुझे क्षमा करना। तुम्हारी बातों पर ध्यान देकर इतने दिनों तक मैं जी जान से कोशिश करती रही—किन्तु उनको आजतक भी भूल न सकी। तुम्हारे श्री चरणों में सैकड़ों करोड़ प्रणाम।

पापिष्ठा ननीबाला

शचीश

१

मृत्यु के पहले नास्तिक जगमोहन ने अपने भतीजे शचीश से कहा। यदि श्राद्ध करने का तुम्हें शौक हो तो अपने बाप का ही करना बड़े चाचा का नहीं। उनकी मृत्यु का विवरण इस प्रकार है—

जिस वर्ष कलकत्ते में पहले पहल प्लेग दिखाई पड़ा तब प्लेग की अपेक्षा उसके राजकीय तगमे पहनने वाले चपरासियों के भय से लोग घबड़ा उठे थे। शचीश के पिता हरिमोहन ने सोचा कि उनके पड़ोसी चमारों को सबसे पहले पकड़ेगा साथ ही उनके परिवार के भी सभी लोगों का मरण निश्चित है। मकान छोड़कर भाग जाने के पहले उन्होंने एक बार अपने भैया से जाकर कहा—भैया कलकत्ता में गंगा जी के किनारे एक मकान लिया है यदि—

जगमोहन ने कहा—बहुत अच्छा। इन लोगों को छोड़कर कैसे चला जाऊँ?

किन लोगों को?

इन्हीं चमारों को।

हरिमोहन मुह टेढ़ा करके चले गये। शचीश क मेस में जाकर उन्होंने उससे कहा—चल।

शचीश ने कहा—मुझे काम है।

मुहल्ले के चमारों की मुर्गीफरोशी का काम?

जी हां यदि जरूरत पड़ गयी तो—

जी हाँ और क्या! यदि जरूरत पड़ गयी तो तुम अपनी चौदह पुश्त तक के लोगों को नरक में भी डाल सकते हो। बदमाश नालायक नास्तिक!

परिपूर्ण कलिकाल का लक्षण देखकर हरिमोहन निराश होकर घर लौट आये। उस दिन उन्होंने छोटे छोटे अक्षरों में दुर्गा नाम लिखकर एक दिस्ता कागज भरकर रख दिया।

हरिमोहन चले गये। मुहल्ले में प्लेग आ गया। कहीं कोई सरकारी आदमी पकड़कर अस्पताल में न ले जाय इस भय से लोगों ने डाक्टर को बुलाना नहीं चाहा। जगमोहन ने स्वय प्लेग का अस्पताल देख आने के बाद कहा—बीमारी फैली हुई है इसलिए मनुष्य ने तो कोई अपराध नहीं किया है।

उन्होंने चेष्टा करके अपने मकान पर प्राइवेट अस्पताल खोल दिया। शचीश के साथ हमलोग दो चार सेवाव्रत-धारी थे। हमलोगों क हाथ मे एक डाक्टर भी थे।

हम लोगों के अस्पताल में पहला रोगी एक मुसलमान आया वह मर गया। द्वितीय रोगी थे स्वयं जगमोहन वे भी नहीं बचे। शचीश से उन्होंने कहा, चिरकाल से जिस धर्म को मानता आया हूँ आज उसका अंतिम पुरस्कार चुका लिया—कोई खेद मनमें नहीं रह गया।

शचीश ने अपने जीवन में कभी अपने बड़े चाचा को प्रणाम नहीं किया था मृत्यु के बाद आज प्रथम और अन्तिम

प्यार के लिए उनके चरणों की धूलि मस्तक से लगायी।

इसके बाद शचीश के साथ जब हरिमोहन की मुलाकात हुई उन्होंने कहा नास्तिक की मृत्यु इसी तरह होती है ?

शचीश ने गर्व के साथ कहा—हां।

२

एक फूँक से दीपक बुझ जाने से उसका प्रकाश जिस तरह एकाएक लुप्त हो जाता है उसी तरह जगमोहन की मृत्यु के बाद शचीश कहा चला गया यह मैं जान ही न सका।

बड़े चाचा को शचीश कितना प्यार करता था इसकी कल्पना तक भी हमलोग नहीं कर सकते। वे शचीश के बाप के मित्र थे इसके अतिरिक्त उसके लड़के भी थे ऐसा कहा भी जा सकता है। क्योंकि अपने सम्बन्ध में वे इतने भोलेभाले और सांसारिक बातों में इतने नासमझ थे कि उनको सभी कठिनाइयों से बचाकर चलना शचीश का एक प्रधान काम था। इसीप्रकार बड़े चाचा के भीतर से ही शचीश ने अपना जो कुछ है वह प्राप्त किया है और उनके अन्दर से ही उसने अपना जो कुछ है वह प्रदान किया है। उसके साथ विच्छेदशून्यता

पहले पहल शचीश को किसतरह खलने लगी थी इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उस असहनीय यंत्रणा के फलस्वरूप शचीश ने केवल यही समझने की चेष्टा की थी कि शून्य इतना शून्य कभी नहीं हो सकता। सत्य नहीं है ऐसी भयंकर शून्यता कहीं भी नहीं है। एक प्रकार से जो नहीं है वही यदि दूसरे प्रकार से हाँ नहीं हो जाता तो उसी छिद्र से सारा संसार पिघलकर समाप्त हो जायगा।

दो साल तक शचीश लगातार देश देशान्तर में घूमता रहा। उसका कुछ भी पता मुझे नहीं लगा। अपने दल को लेकर हमलोग और भी जोर शोर से अपना काम चलाने लगे। जो लोग धर्म का नाम लेकर किसी न किसी बात को मानते हैं उनको बलात् छेड़ छेड़कर हमलोग और भी परेशान करने लगे और चुन चुनकर ऐसे सब भले कामों में लग गये। देश गांव के भले आदमियों के लड़के हमलोगों को अच्छी बात न कह सके। शचीश था हम लोगों का फूल वह जब हट गया तब हम लोगों के कांटे बिलकुल उग्र और उल्लंघ हो उठे।

३

दो वर्ष तक शचीश का कुछ भी समाचार नहीं मिला। शचीश की जरा भी निन्दा करने की मनमें इच्छा नहीं होती। किन्तु मन ही मन इस बात को सोचे बिना मैं न रह सका कि जिस सुर में शचीश बंधा हुआ था एकाएक इस झटके को खा लने के कारण वह तो उतर गया है। एक सन्यासी को देखकर एक बार बड़े चाचा ने कहा था संसार मनुष्य को सर्राफ की तरह ठोंक ठाककर ग्रहण करता है शोक की चोट हानि की चोट और भक्ति के प्रलोभन की चोट लग जाने से जिनका स्वर दुबल हो जाता है सर्राफ उन्हें खींचकर फेंक देता है ये वैरागी लोग भी फेंके गये खोटे रुपये की तरह हैं जीवन के कारबार में अचल हैं फिर भी ये लोग ठाट बाट से घूमते हुए यह दिखलाते हैं मानों इन्हीं लोगों ने ही संसार त्याग किया है। जिसमें कुछ भी योग्यता है उसके लिए संसार से जरा भी खिसकने की गुंजाइश नहीं है सूखी हुई पत्ती पेड़ों से झरकर गिर जाती हैं पेड़ ही उसे खुद गिरा देता है—इसी कारण वह कूड़े में शामिल मान ली जाती है।

इतने लोगों के रहते हुए शचीश क्या अन्त में उसी कूड़े

क ढेर में जा पड़ा है? शोक की काली कसौटी पर क्या यह बात लिखी जा चुकी है कि जीवन के बाजार में शचीश का कुछ भी मूल्य नहीं है।

ऐसे ही समय में सुना गया कि चटगाँव के पास किसी जगह पर शचीश—हमारा शचीश—लीलानन्द स्वामी के साथ कीर्तन में मतवाला होकर करताल बजाता हुआ मुहल्ले में ऊधम मचाकर नाचता हुआ घूम रहा है।

एक दिन किसी तरह भी कल्पना में यह बात नहीं लायी जा सकती थी कि शचीश जैसा मनुष्य किसी भी हालत में नास्तिक हो जा सकता है। आज किसीप्रकार भी मैं न समझ सका कि लीलानन्द स्वामी कैसे इसतरह अपने साथ उसे नचाता हुआ घूम रहा है!

इधर हमलोग मुँह दिखावें तो कैसे? शत्रुओं का दल हसने लगेगा। शत्रुओं की सख्या भी तो एक दो नहीं है।

अपने दल के लोग शचीश पर बहुत ही बिगड़ उठे। बहुतों ने कहा कि उन्हें पहले से ही स्पष्ट रूप से यह बात मालूम थी कि शचीश में कोइ भी वस्तु नहीं है केवल खोखली भावुकता ही भरी हुई है।

शचीश को मैं कितना प्यार करता हूँ इस बार यह बात मेरी समझ में आ गयी। हमारे दल पर उसने इसप्रकार मृत्युबाण से प्रहार किया है फिर भी किसी तरह मैं उस पर क्रोध न कर सका।

४

लीलानन्द स्वामी का पता लगाने के लिए मैं निकल पड़ा कितनी नदियों को पार किया मैदानों को रौंद डाला मोदी की दूकान पर रात बिताये, अन्त में एक गाँव मं पहुँचकर शचीश को पकड़ लिया। उस समय दिन के दो बजे रहे होंगे।

इच्छा थी कि शचीश को एकान्त में पाऊँ। किन्तु उपाय कौन सा था। जिस शिष्य के घरपर स्वामीजी ने डेरा डाला था उसका दालान आंगन सब ठसाठस भरा था। प्रातःकाल का कीर्तन समाप्त हो गया था जो लोग दूर से आये थे उनके लिए भोजन का इन्तजाम हो रहा था।

मुझे देखते ही शचीश दौड़ता हुआ आया और आते ही मुझे अपनी छाती में दबा लिया। मैं अवाक् हो गया। शचीश चिरकाल से संयमी है उसकी स्तब्धता में उसके हृदय की गंभीरता का परिचय मिलता है। आज मुझे जान पड़ा कि शचीश नशे में है।

स्वामीजी कमरे में विश्राम कर रहे थे। किवाड़ का एक पल्ला कुछ खुला था। मुझे उन्होंने देख लिया। गंभीर कंठ से पुकार उठे—शचीश!

घबड़ाकर शचीश कमरे में चला गया। स्वामीजी ने पूछा—यह कौन है?

शचीश ने कहा—श्री विलास मेरा मित्र।

उन्हीं दिनों लोक समाज में मेरे नाम का प्रचार शुरू हो गया। मेरा अंग्रेजी भाषण सुनकर किसी अंग्रेजी विद्वान ने कहा था यह मनुष्य ऐसा है कि—रहने दो उन सब बातों को लिखकर निरर्थक शत्रुओं की वृद्धि न करूँगा। मैं जो भयंकर नास्तिक हूँ और प्रति घंटे में बीस पचीस मील के वेग से आश्चर्यजनक रूप से अंग्रेजी बोली की चौकड़ी हाँकता हुआ चल सकता हूँ यह बात छात्र समाज से लेकर छात्रों के पितृ समाज तक प्रचारित हो चुकी थी।

मुझे विश्वास है कि मेरा आना जानकर स्वामीजी खुश हुये। उन्होंने मुझे देखना चाहा। कमरे में घुसकर मैंने नमस्कार किया उस नमस्कार में मेरे केवल दोनों हाथ खड्ग की भांति मेरे ललाट के पास तक ऊपर उठे माथा नीचे नहीं झुका। हमलोग बड़े चाचा के चेले हैं,हमारा नमस्कार गुणहीन धनुष की भांति नमो अंश को छोड़कर विषम रूप से खड्ग सा हो गया था।

स्वामीजी ने इसे लक्ष्य किया और शचीश से कहा—जरा तम्बाकू चढ़ा ले आओ तो शचीश।

शचीश तम्बाकू चढ़ाने लगा। उसकी टिकिया जैसे जैसे खतम होने लगी मैं भी उसी तरह लाल होने लगा। कहाँ बैठूं कुछ भी समझ में नहीं आया। असबाब जो कुछ है उनमें उनकी एक चौकी है उसी के ऊपर स्वामीजी का बिस्तर बिछा हुआ है। उसी बिस्तर के एक छोर पर बैठ जाना मैं अनुचित नहीं समझता था किंतु नहीं मालूम किस कारण मुझसे ऐसा न हो सका।

देखा कि स्वामीजी जानते हैं कि मैं रायचन्द प्रेमचन्द छात्रवृत्ति वाला हूँ। वे बोले बच्चा मोती चुनने के लिए गोताखोर समुद्र के तले तक जा पहुँचता है किन्तु यदि वहीं पर जाकर टिक जाय तो फिर रक्षा ही हो सकती। निष्कृति के लिए ऊपर उठकर उसे दम लेना ही पड़ता है। यदि बचाना चाहते हो बच्चा तो इस बार विद्या-समुद्र के तले से ऊपर उठना ही पड़ेगा। प्रेमचन्द रायचन्द की निवृत्ति भी एक बार देखलो।

शचीशने तम्बाकू चढ़ाकर स्वमीजी के हाथ में देदिया और उनके पैरों की ओर जमीन पर बैठ गया। स्वामीजी ने उसे उसी समय शचीश की ओर अपने पैर बढ़ा दिये। शचीश धीरे धीरे उनके पैरों पर अपना हाथ फेरने लगा।

यह देखकर मेरे मन में इतनी बड़ी चोट लगी कि मैं उस कमरे में ठहर न सका। मैं समझ गया कि मुझपर विशेष रूप से चोट पहुँचाने की गरज से ही शचीश से यह तम्बाकू चढ़वाने और पैर दबवाने का कार्य कराया जा रहा है।

स्वामीजी विश्राम करने लगे अभ्यागतों का खिचड़ी खाना समाप्त हो गया। पाँच बजे से फिर कीर्तन शुरू हुआ और रात के दस बजे तक चलता रहा।

रात के समय शचीश अकेला मिला तो मैंने उससे कहा शचीश, जन्मकाल से ही तुम मुक्ति के बीच में ही मनुष्य बने हो किन्तु आज तुमने किस बन्धन में अपने को जकड़ लिया है? बड़े चाचा की मृत्यु क्या इतनी बड़ी मृत्यु है?

मेरे नाम श्री विलास के प्रथम दो अक्षरों को उलट कर शचीश कुछ तो स्नेह के कौतुक से और कुछ तो मेरे चेहरे के गुणानुसार मुझे विश्री कहकर पुकारता था। उसने कहा—विश्री

जब बड़े चाचा जीवित थे तब उन्होंने मुझे जीवन के कर्म क्षेत्र में मुक्ति दी थी जिस प्रकार छोटा बच्चा खेल कूद के आंगन म मुक्ति प्राप्त करता है। बड़े चाचा की मृत्यु हो जाने के बाद उन्होंने मुझे रस के समुन्द्र मुक्ति दी है जिस तरह छोटा बच्चा माता की गोद में मुक्ति प्राप्त करता है। दिन के समय की उस मुक्ति का तो मैंने उपभोग किया है अब रात्रि काल की इस मुक्ति को ही क्यों छोड़ दूँ ? ये दोनों ही बातें उन्हीं मेरे चाचाजी की ही करतूत है यह तुम पक्का समझ रखो।

मैंने कहा जो कुछ भी कहो किन्तु यह तम्बाकू चढ़ाना पैर दबवाना यह सब उपसर्ग तो बड़े चाचाजी में नहीं थे—मुक्ति का यह स्वरूप नहीं है। शचीश ने कहा वह तो तट के ऊपर की मुक्ति थी उस समय कार्यक्षेत्र में बड़े चाचा ने मेरे हाथ पैर सचल कर दिये थे। और यह तो रसका समुद्र है यहाँ तो नाव का बन्धन ही मुक्ति का मार्ग है। इसी कारण तो गुरूजी ने मुझे चारों ओर से सेवा के बीच ही अटका रखा है—मैं पैर दबाकर इसे पार कर रहा हूँ।

मैंने कहा तुम्हारे मुँह से यह बात सुनने में बुरी नहीं लगती किन्तु जो तुम्हारी तरफ इस तरह पैर बढ़ा दे सकते हैं वे—

शचीश बोला–उनको सेवा की जरूरत नहीं हैं इसीलिए इस तरह पैर बढ़ा दे सकते हैं यदि जरूरत रहती तो वे लज्जा अनुभव करते जरूरत तो मुझको ही है।

समझ गया शचीश एक ऐसे जगत में है जहाँ मैं बिल कुल ही नहीं हूँ। मुलाकात होते ही जिसको शचीश ने

सीने से लगा कर जकड़ लिया था वह मैं था श्री विलास नहीं वह था मैं का सर्वभूत एक आइडिया।

इस तरह की आइडिया वस्तु मदिरा के समान है—नशे की विह्वलता में मतवाला जिसको तिसको छाती से जकड़ कर आंसू बहा सकता है तब मैं ही क्या हूँ और दूसरे ही क्या हैं। किन्तु इस तरह छाती से जकड़ लेने की क्रिया में मतवाले को जितना ही आनन्द क्यों न मिलता हो मुझे तो नहीं है। मैं तो भेदज्ञान विलुप्त एकाकारता की बाढ का एक लहर मात्र भी होना नहीं चाहता—मैं तो मैं हूँ।

समझ लिया कि तर्क का काम नहीं है। किन्तु शचीश को छोड़ जाने की शक्ति मुझमें नहीं थी शचीश के आकर्षण से इस दल के स्रोत में मैं भी एक गांव से दूसरे गांव में बहता हुआ चक्कर काटने लगा। धीरे धीरे नशा ने मुझपर भी अधिकार कर लिया आंसू बहाया गुरुजी का पैर दाबने लगा और एक दिन हठात् किस एक आवेश में शचीश का कैसा एक अलौकिक स्वरूप देखा जो विशेष किसी देवता में ही सम्भव हो सकता है।

५

हम लोगों की तरह इतने बड़े दो दुद्धप अंग्रेजीदाँ नास्तिकों को अपने दल में जुटाकर लीलानन्दस्वामी का नाम चारो तरफ फैल गया। कलकत्ता के रहने वाले उनके भक्त लोग इसबार उनको शहर में आकर डेरा जमाने के लिये जिद करने लगे।

वे कलकत्ते आ गये।

शिवतोष नामका उनका एक परम भक्त शिष्य था। कलकत्ते में रहते समय स्वामी जी उसी के घर ठहरते थे—समस्त दलबल के साथ उनकी सेवा करना ही उसके जीवन का प्रधान आनन्द था।

मरते समय वह अपनी युवती तथा सन्तानहीन स्त्री को जीवननिर्वाहके लिये कुछ देरतक कलकत्ते वाला अपना मकान और शेष सम्पत्ति गुरु को दे गया। उसकी इच्छा थी कि काल-क्रमसे यही मकान उनके सम्प्रदाय का प्रधान तीर्थ स्थान बन जाय। इसी मकान में आकर ठहरा गया।

गाँव गाँव में जब तन्मय होकर घूम रहा था उस समय एक प्रकार के भाव में था कलकत्ते में आकर उस नशे को जमा रखना मेरे लिये कठिन हो गया।

इतने दिन मैं एक रसके राज्य में था। वहाँ विश्वव्यापिनी नारीके साथ चित्तव्यापी पुरुषकी प्रेमलीला चलती थी। गांवके चरागाह का मैदान खेवाघाट के बट वृक्षकी छाया अवकाश के आवेश से भरा मध्याह्न और झिल्लियों के रवसे आकम्पित सन्ध्याकालकी निस्तब्धता उसके ही स्वरसे परिपूर्ण हुई थी। मानो स्वप्न में चल रहा था। खुले आकाश में कहीं बाधा नहीं मिली—कठिन कलकत्ते में आकर मस्तक टकरा गया मनुष्यों की भीड़ का धक्का खा गया—खुमारी टूट गयी। किसी दिन मैंने इसी कलकत्ते के मेस में दिनरात साधना करके पढ़ना सम्पन्न किया है गोलदीघी में मित्रों के साथ मिलकर देश की समस्याओं पर विचार किया है राजनीतिक सम्मेलनों में स्वयसेवक बनकर काम किया है। पुलिस का अन्याय अत्याचार दूर करने की चेष्टामें जेल जाने की नौबत का सामना किया है यहीं पर बड़े चाचा की पुकार हाजिर होकर व्रत धारण किया है कि समाज की डकैतियों को प्राणों की बाजी लगाकर हटाऊंगा सब तरह की गुलामियों का जाल काटकर देशवासियों के मन को स्वतन्त्र करूंगा फलत यहीं के लोगों के बीच से अपने-पराये परिचित-अपरिचित सभी की गालियां खाते खाते पालवाली नाव जिस तरह उल्टी धारा में छाती फुलाकर चली जाती है यौवनके आरम्भसे आजतक उसी तरह चला आया हूँ। भूख प्यास सुख दुःख भलाई बुराई का विचित्र समस्याओं में चक्कर खाये हुए मनुष्यों की भीड़ से भरे उसी कलकत्ते में अश्रुवाष्पाच्छन्न रसकी विह्वलता को जगा रखनेके लिए प्राणपणसे चेष्टा करने लगा। बार बार यह खयाल आने लगा कि मैं दुर्बल हूँ मैं अपराध कर रहा हूँ मेरी साधना में बल नहीं है। शचीशकी ओर गौर से देखता हूँ तो

यह कलकत्ता शहर दुनियाके भूवृत्तान्त में किसी जगह में है इसका कोई भी चिह्न उसके मुँहपर नहीं है उसके निकट यह सब छाया है।

६

शिवतोष के घर पर हम दोना मित्र मिलकर गुरुजी के साथही रहने लगे। हमलोग ही उनके प्रधान शिष्य हैं। हम लोगों को वे कभी अपने पास से हटने देना नहीं चाहते।

गुरुजी को लेकर गुरुभाइयों को लेकर दिनरात रस और रसतत्व की आलोचना चलने लगी। उन सब दुर्गम गम्भीर बातों के बीच में एकाएक कभी कभी अन्दर महल से एक लड़की के गले की ऊँची हँसी आ पहुँचती थी। कभी कभी एक ऊंची आवाज की पुकार सुनता—'वामी' हम लोगों ने भावना के जिस आकाश पर अपने मन को टिका रक्खा था उसक सामने यह सब अत्यन्त तुच्छ है—किन्तु एका एक मालूम पड़ता मानो अनावृष्टि क बीच झरझर करती हुई एक हो गयी। हमलोगों की दीवाल के पास के दृश्य लोक से, फूलों की छिन्न पपड़ियों की तरह जीवन के छोटे

छोटे परिचय जब हमलोगों को स्पर्श कर जाते तब मैं क्षण भर के लिए समझता कि रस का लोक तो वहीं पर है—जहाँ उस भाभी के आँचल में घर गृहस्थी वाली चाभियों का गुच्छा जब उठता है—जहाँ रसोईघर से रसोई की गन्ध उठती रहती है—जहाँ घर में झाड़ू लगाने का शब्द सुनाई पड़ता है—जहाँ सब तुच्छ है किन्तु सब सत्य है जहाँ सब मधुर तीखे मोटे पतले एक साथ मिले हुए हैं वहीं पर रस का स्वर्ग है।

विधवा का नाम था दामिनी। उसको आड़ओट में कभी कभी अचानक देख पाता था। हम दोनों मित्र गुरुजी के इतने एकात्म थे कि थोड़े ही दिनों में हमलोगों से दामिनी की आड़ओट और नहीं रह गयी।

दामिनी मानो सावनके बादलों के बीच की दामिनी है। बाहर से पुंज पुंज यौवन से वह परिपूर्ण है और अन्दर से चंचल अग्नि झिलमिल करती हुई चमक उठती है।

शचीश की डायरी में एक स्थान पर लिखा हुआ है—ननीबाला में मैंने नारी का एक विश्वरूप देखा है—अपवित्रता के कलंक को जिस नारी ने अपने में ग्रहण किया पापी के लिए उस नारी ने मरकर जीवन के सुधापात्र को पूर्णतर कर दिया। दामिनी में मैंने नारी का एक और ही विश्वरूप देखा है वह नारी मृत्यु की कोई नहीं है जीवनरस की रसिक है। वसन्त की पुष्पवाटिका की भाँति लावण्य गन्ध और हिल्लोल से वह केवल परिपूर्ण होती जा रही है वह साधु सन्यासी को घर में जगह देने में नाराज है वह उत्तरी हवा को एक दमड़ी भी कर न देगी, ऐसी ही प्रतिज्ञा करके बैठी है।

दामिनी के सम्बन्ध में पहले शुरू की बात बता लूँ। पाठ के रोजगार म एक दिन जब उसके बाप अन्नदा प्रसाद का कोप एकाएक मुनाफे की अचानक बाढ से उमड़ उठा उसी समय शिवतोष से दामिनी का विवाह हुआ। इतने दिनों तक कवल शिवतोष का कुल मर्यादा ही अच्छी थी अब उसका समय भी अच्छा हो गया। अन्नदा ने दामाद को कलकत्त में एक मकान और जिसमें खाने पीने का कोई कष्ट न हो एसा एक बन्दोबस्त कर दिया। इसके अतिरिक्त अलकार आदि भी कम नहीं दिये।

उन्होंने शिवतोष को अपने दफ्तर में काम सिखाने की बहुत ही चेष्टा की थी किन्तु शिवतोप का मन सांसारिक बातों में नहीं था। एक ज्योतिषी ने उसे एक दिन कह दिया था कि किसी एक विशेष योग में बृहस्पति की किसी एक विशेष दृष्टि से वह जीवन्मुक्त हो जायगा। उसी दिन से जीवन्मुक्ति की प्रत्याशा में वह कांचन और अन्य रमणीक पदार्थों का लोभ परित्याग करने बैठ गया। इसी बीच उसने लीलानन्द स्वामी से दीक्षा ले ली।

इधर रोजगार की उलटी हवा का झोंका खाकर अन्नदा की भरी भाग्य नौका एकदम लुढ़क गयी। अब तो घर द्वार सब बिक जाने से पेट चलाना कठिन हो गया है।

एक दिन शिवतोषने शाम को घर में आकर अपनी स्त्री से कहा स्वामीजी आये हैं वे तुमको बुला रहे हैं कुछ उपदेश देंगे। दामिनी ने कहा नहीं अभी मैं न जा सकूँगी। मेरे पास समय नहीं है।

समय नहीं है? शिवतोष ने पास आकर देखा दामिनी अन्धकारपूर्ण घर में बैठकर गहने का बक्स खोलकर गहने

बाहर निकाल रही है। पूछा यह क्या कर रही हो ? दामिनी ने कहा मैं गहना सम्हाल कर रख रही हूँ ?

इसीलिए समय नहीं है ? खूब ? दूसरे दिन दामिनी ने लोहे की सन्दूक खोलकर देखा कि उसके गहने का बक्स नहीं है। अपने पति से पूछा—मेरा गहना ? पति ने कहा—उसे तो तुमने अपने गुरु को चढ़ा दिया है। इसीलिए ही उन्होंने ठीक उसी समय तुमको बुलाया था वे तो अन्तर्यामी हैं उन्होंने तुम्हारे कांचन लोभ को हरण कर लिया है।

दामिनी ने आग बबूला होकर कहा—मेरा गहना दे दो।

पति ने पूछा क्यों क्या करोगी। दामिनी ने कहा मेरे बाबू जी का दिया हुआ है। मैं उसे अपने बाबू जी को दूंगी।

शिवतोष ने कहा उससे कहीं अच्छी जगह में वह चला गया है। विपयी का पेट न भरकर भक्त की सेवा में उसका उत्सर्ग हो गया है।

इसी तरह से भक्तिकी डकैती शुरू हुई। जोर जबर्दस्तीसे दामिनी के मन से सब तरह की वासनाओं का भूत झाड़ने के लिए पग पगपर ओझाओं का उत्पात चलने लगा। जिस समय दामिनी क बाप और उसके छोटे छोटे भाई उपवास से मर रहे थे उस समय घर में प्रतिदिन साठ सत्तर भक्तों की सेवा का अन्न उसे अपने ही हाथो से तैयार करना पड़ा है। जान बूझकर उसने तरकरी में नमक नहीं डाला और जान बूझकर दूध गिरा दिया फिर भी उनकी तपस्या इसी प्रकार चलती रही।

ऐसे ही समय में उसका पति मरते समय पति की भक्तिहीनता का अन्तिम दण्ड दे गया। समस्त सम्पत्ति के साथ स्त्रीको विशेष रूप से गुरुके हाथोंमें सौंप दिया।

७

घर में अविश्राम भक्तिका लहर उठ रहा है। कितनी दूरसे कितने हा लोग आकर गुरु की शरण ले रहे हैं आर दामिनी चेष्टा के बिना ही इनके पास आ सका फिर भी उस दुलभ सौभाग्य को उसने दिनरात अपमानित करक खदेड़ रखा।

जिस दिन गुरुजी विशेष रूपसे उपदेश देने के लिए उसे बुलाते तो वह कहती मेरे सिर मे दद हो रहा हे। जिस दिन अपने सन्ध्याकालीन आयोजन में काई विशेष त्रुटि देखकर दामिनी से कारण पूछते तो वह कहती कि मैं थियेटर देखने गयी थी। यह उत्तर सत्य नहीं है किन्तु कटु है। दलों में भक्त स्त्रियाँ पहुँचतीं और दामिनी का काण्ड देखकर गाल पर हाथ रखकर बैठ जातीं। पहले तो उसकी वेषभूषा विधवा की भाँति नहीं है इसक अतिरिक्त वह गुरुजी के उपदेश वाक्यों क समीप तक नहा जाती—इतने बड़े महापुरुष क इतने समीप रहने स आप ही आप एक तरह के संयम और शुचिता से शरीर और मन प्रकाशमान हो उठता ह पर इसके अन्दर तो इसका कुछ भा लक्षण नहा दिखाई पड़ता। सभी ने कहा, धन्य है! बहुत बहुत देखा है किन्तु ऐसी औरत तो कभी नहीं देखी।

स्वामी जी हँसने लगते। वे कहते कि जिसमें बल है भगवान उसीसे लड़ना पसन्द करते हैं। एक दिन जब यह बात मान लेगी तब इसके मुँह में फिर बात शेष न रह जायगी।

वे अत्यधिक इसे क्षमा करने लगे। इस प्रकार की क्षमा दामिनी को और भी अधिक असह्य मालूम होने लगी क्योंकि यह तो शासन नियन्त्रण का ही नामान्तर है। दामिनी के साथ व्यवहार में गुरुजी अतिरिक्त रूप से जो मधुरता प्रकट कर रहे थे उसके सम्बन्धमें एक दिन अचानक ही उन्होंने सुना कि दामिनी अपनी किसी सगिनी से उसीकी ही नकल करके हस रही है।

फिर भी वे बोले जो होनहार है वह होकर ही रहेगा और उसे दिखाने के लिए ही दामिनी विधाता के लिए उपलक्ष बनकर मौजूद है—उस बेचारी का दोष नहीं है।

पहले पहल आकर कुछ दिनों तक हम लोगों ने दामिनी की यह अवस्था देखी थी। इसके बाद जो होनहार था होना शुरू हुआ।

और लिखने की इच्छा नहीं होती—लिखना भी कठिन है। जीवन के परदे की ओट में अदृश्य हाथ से वेदना के जिस जाल की बुनाई होती रहती है उसका नकशा किसी शास्त्र का नहीं होता किसी पैमाइश का नहीं होता—इसलिए तो बाहर भीतर बेमेल होकर इतनी चोट खानी पड़ती है इतनी रूलाई फूट पड़ती है।

विद्रोह का कर्कश आवरण किस प्रभात के आलोक में चुपचाप एकदम टुकड़े टुकड़े होकर फट गया इसे कोई जान न सका। आत्मोत्सर्ग के फूल ने शिशिर भरे मुँह को ऊपर की

ओर उठा दिया। ग्गमिनी की सेवा अब इतनी सरलता से इतनी सुन्दर हो उठी कि उसकी मधुरता से भक्तों की साधना के ऊपर मानो भक्तवत्सल का कोई विशेष वरदान आ पहुँचा।

इसी प्रकार दामिनी जिससमय स्थिर सौदमिनी होती जा रही थी शचीश उसकी शोभा देखने लगा। किन्तु मैं कह रहा हूँ कि शचीश ने केवल उसकी शोभा को देखा दामिनी को नहीं।

शचीश के बैठकखाने में चीनी मिट्टी की एक तस्वीर पर लीलानन्द स्वामी की ध्यानमूर्ति का एक फोटोग्राफ था। एक दिन उसने देखा कि वह टूट कर फर्श पर टुकड़े टुकड़े होकर पड़ी है। शचीश ने सोचा उसकी पाली हुई बिल्ली ने यह कांड किया है। बीच बीच में और ऐसे ही अनेक उपसर्ग दिखाई पड़ने लगे जो जंगली बिल्ली के लिए भी असाध्य है।

चारों तरफ के आकाश में एक चंचलता की हवा बह चली। एक अदृश्य बिजली अन्दर ही अन्दर चमकने लगी। दूसरों की बात नहीं जानता अतएव व्यथा से मेरा मन घब ड़ाने लगता। कभी कभी सोचने लगता। दिन रात का यह रसतरंग मुझसे सहा नहीं गया—मैं सोचने लगा इसके बीच से एक बारगी एकही दौड़में भाग जाऊँगा—वह जो चमारों के लड़कों को साथ लेकर सब प्रकार के रसों से वर्जित बंगला वर्णमाला के संयुक्ताक्षरों के विषय में आलोचना चलती थी वही बल्कि मेरे लिए अच्छी थी।

एक दिन जाड़े की दुपहरिया में जब गुरुजी विश्राम कर रहे थे और भक्त लोग थके माँदे थे शचीश ने किसी कारण से असमय में ही अपने सोने के कमरे में प्रवेश किया किन्तु एकदम भीतर न जाकर चौंक कर चौखट के पास ही खड़ा

हो गया। देखा कि दामिनी अपनी केशराशि बिखरा कर जमीनपर झुकी हुई है और फर्श पर अपना माथा पटक रही है साथ ही साथ कह रही है—पत्थर हे मेरे पत्थर हे मेरे पत्थर के देवता दया करो मुझे मार डालो।

भय के मारे शचीश का समूचा शरीर काँप उठा। वह द्रुतगति से लौट गया।

८

गुरु जी प्रतिवर्ष एक बार किसी दुर्गम एकान्त स्थान में भ्रमण के लिए जाया करते थे। माघ के महीने में इस वर्ष भी उनका यही समय आ गया है। शचीश ने कहा मैं भी साथ चलूँगा।

मैंने कहा मैं भी चलूँगा। रस की उत्तेजना से मेरी मज्जा मज्जा एकदम जीर्ण हो गयी थी। कुछ दिनों के लिए भ्रमण का क्लेश और निर्जन स्थान का वास मेरे लिए नितान्त आवश्यक था।

स्वामीजी ने दामिनी को बुलाकर कहा बेटी मैं भ्रमण के लिए बाहर जाऊँगा। पहले ऐसे समय में जिस तरह तुम

अपनी मौसी के घर जाकर रहती थी, इस बार भी उसी तरह का इन्तजाम कर देता हूँ।

दामिनी ने कहा मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।

स्वामीजी ने कहा तुम कैसे चल सकोगी? वह बहुत ही कठिन रास्ता है।

दामिनी ने कहा सकूँगी। मेरे लिए सोचने की जरूरत न पड़ेगी।

स्वामीजी दामिनी की इस निष्ठा से प्रसन्न हुए। और वर्षों में ठीक यही समय दामिनी के लिए छुट्टी का रहता साल भर इसी के लिए उसका मन बाट जोहता रहता। स्वामीजी ने सोचा—यह कैसा अलौकिक काण्ड है! भगवान के रस का रसायन पत्थर को पिघला कर नवनीत कैसे बना देता है?

किसी तरह भी जिद नहीं छोड़ा आखिर दामिनी भी साथ गयी।

१

उस दिन प्राय छ घटे धूप में पैदल चलकर हमलोग जिस जगह पर जा पहुचे थे वह समुद्र के बीचका एक अन्त द्वीप था। एकदम विजन निस्तब्ध—नारियल बन के पल्लव के साथ शान्त समुद्र का अलस कल्लोल मिल रहा था। ऐसा मालूम हुआ मानो नींद के आवेश में पृथ्वी का एक थका हुआ हाथ समुद्र के ऊपर फैलकर पड़ा हुआ है। उस हाथ की हथेली पर एक नीले रग का छोटा सा पहाड है। पहाड़ की दीवार में बहुत दिनों की खुदी हुई एक गुफा है। वह बौद्धों की है या हिंदुओं की उसकी दीवार में जो सब मूर्तियाँ हैं वे बुद्ध की हैं या वासुदेव की उसकी शिल्पकला में यूनानी प्रभाव है या नहीं—इस विषय को लेकर विद्वानों में गहरी अशान्ति का कारण उत्पन्न हो चुका है।

यह बात तै थी कि गुफा देखकर हमलोग बस्ती में लौट आयेंगे। किन्तु यह सम्भावना अब नहीं रही। उस समय दिन बीत चुका था कृष्णपक्ष की द्वादशी तिथि थी। गुरुजी ने कहा आज इस गुफामें ही रात बितानी पड़ेगी।

हम तीनों समुद्र के किनारे बालूपर बैठ गये। समुद्र के पश्चिमी छोरपर आसन्न अन्धकार के सामने सूर्यास्त दिवस के अन्तिम नमस्कार की भाँति झुक पड़ा। गुरुजी ने गाना शुरू किया आधुनिक कविका गान उनको भाता है।

पथ में तुमसे मिलन हुआ
इस दिवस के ही अवसान में।
देखत ही मैं सन्ध्या ज्योति
लीन हो गयी अन्धकार में।

उस दिन गाना खूब जम गया था। दामिनी की आखों से आँसू झरने लगा। स्वामीजी ने अन्तरा पकड़ी—

दर्शन पाऊँ न भी पाऊँ
शोक नहीं कुछ मेरे मन में।
खड़े रहो क्षण मात्र भी
चरण लपेटूँ केश जाल से।

स्वामी जी जब चुप हो गये तब आकाशव्यापी—समुद्र व्यापी सन्ध्या की स्तब्धता नीरव सुर क रस से एक सुनहले रंग के पके फल की तरह भर उठी। दामिनी ने सिर झुकाकर प्रणाम किया—बहुत देर तक सिर ऊपर नहीं उठाया। उसके बाल बिखर कर जमीन पर लोट रहे थे।

१०

शचीश की डायरीमें लिखा है —

गुहा में बहुत से कमरे हैं। मैं उनमें से एक में कम्बल बिछाकर सो रहा।

उस गुहा का अन्धकार मानो एक काले जन्तु सा मालूम हो रहा था—उसकी भीगी हुई सांस मानो मेरे शरीर को छू रही थी। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह आदिम काल की प्रथम सृष्टि का प्रथम जन्तु है उसकी आँखें नहीं हैं, उसके कान नहीं हैं, उसको केवल एक बहुत बड़ी भूख लगी है वह अनन्त काल के लिए इस गुफा का बन्दी है उसके पास मन नहीं है—वह कुछ भी नहीं जानता उसको केवल व्यथा है—वह चुपचाप रोया करता है।

थकावट ने एक बोझ की भाँति मेरे शरीर को दबा रखा किन्तु किसी तरह भी नींद नहीं आयी। कोई एक पक्षी—शायद चिमगादड़ ही था—भीतर से बाहर फिर बाहर से भीतर झपाझप डैने की आवाज करता हुआ अंधकार में चला गया। मेरे शरीर में उसकी हवा लगने से सारे शरीर के रोम काँटे की तरह खड़े हो गये।

मन में सोच लिया कि बाहर जाकर सोऊंगा। पर गुफा का दरवाजा किधर है इसकी याद नहीं रही। सिर झुका कर

एक तरफ चलने की चेष्टा करने लगा तो माखा टकरा गया दूसरी तरफ जाने लगा तो उधर भी टक्कर लगा फिर तीसरी तरफ चला तो एक छोटे से गढ़े में जा गिरा। वहाँ पर गुफा के दरार से पानी चू कर जमा हो गया था।

अन्त में लौट आया और कम्बल पर लेट गया। मालूम हुआ कि उस आदिम जन्तु ने अपने लार से भीगे हुए पजे में जकड़ रखा है किसी तरफ से निकल जाने का कोई रास्ता ही मेरे लिए नहीं रह गया है। यह केवल एक काली क्षुधा है यह मुझे केवल धीरे धीरे चाटती रहेगी और शरीर को क्षीण कर डालेगी। इसका रसका जारक रस है जो चुपके से जीर्ण कर डालता है।

किसी तरह नींद आ जाने से मैं बच जाता मेरी जाग्रत चेतना इतने बड़े सर्वसंहारक अन्धकार के निविड़ आलिंगन को सह नहीं सकती इसे केवल मृत्यु ही सह सकती है।

मालूम नहीं कितनी देर बाद—शायद वह वास्तविक निद्रा नहीं थी—अयसन्नता की एक पतली चादर का परदा मेरी चेतना के ऊपर पड़ गया। एक बार उस निन्दा के आवेश में मैंने अपने पैर के निकट एक फन नि श्वास का अनुभव किया। भय से मेरा शरीर ठढा हो गया। वही अदिम जानवर!

उसके बाद किसी मेने रा पैर जकड़ लिया। पहले मैंने सोचा कि कोई जगली जानवर होगा। किन्तु उसके शरीर में तो रोए होते हैं—इसको ते रोएं नहीं हैं। मेरा समूचा शरीर मानों सिकुड़ गया। जान पड़ा कि साँप की तरह कोई जानवर है जिसको मैं नहीं पहचानता। उसका सिर कैसा है, शरीर कैसा है उसकी पूछ कैसी है मैं नहीं जानता—उस

वे ग्रास करने की प्रणाली कैसी है यह मैं समझ नहीं सका। यह इतना नरम है इसीलिए इतना भयानक है वही क्षुधा का पुंज !

भय और घृणा से मेरा गला रूध गया। मैं अपने दोनों पैरों से उसे ढकेलने लगा। ऐसा जान पड़ा मानो उसने मेरे पैरों पर अपना मुंह रख दिया है—घन घन सांस चल रही है वह मुँह कैसा है मैं नहीं जानता। मैंने पैर झटका झटका कर लात चलाया।

अन्त में मेरी तन्द्रा टूट गयी। पहले मैंने सोचा था कि उसके शरीर में रोएँ नहीं हैं किन्तु अकस्मात् अनुभव करने लगा कि मेरे पैरों पर एक राशि केशर आ पड़ा है। झप्पट उठकर बैठ गया।

अन्धकार में कौन चला गया। कोई शब्द मानो सुनाई पड़ा वह क्या दबी हुई रुलाई थी ?

दामिनी

१

गुफा से हमलोग लौट आये। गाँव में मन्दिर के पास गुरुजी के किसी शिष्य के मकान के दो मंजिले के कमरों में हमलोगों के रहने का इंतजाम हुआ था।

गुफा से लौट आने के बाद से दामिनी और अधिक दिख लाई नहीं पड़ती। वह हमलोगों के लिए रसोई बनाकर परोस देती है लेकिन अब और सामना नहीं करती। उसने यहाँ के मुहल्ले की लड़कियों से मेल जोल कर लिया है। सारा दिन उन्हीं लोगों के साथ कभी इनके घर कभी उनके घर घूमा करती है।

गुरुजी कुछ नाराज हुए। उन्होंने सोचा—मिट्टी के घर की ओर ही दामिनी का झुकाव अधिक है आकाश की ओर नहीं। कुछ दिन तक जिस प्रकार वह देवता की पूजा की तरह हम लोगों की सेवा में लगी थी अब उसमें क्लान्ति देख पाता हूँ। भूल होती है काम में उसकी वह सरल श्री और निखलाई नहीं पड़ती।

गुरुजी ने फिर से उससे मनही मन भय करना शुरू कर दिया है। दामिनी की भौंहों में कई दिनों से एक भृकुटि काली होती जा रही है और उसके मिजाज की हवा आज कल कुछ जैसे टेढ़े मेढ़े बह रही है।

दामिनी के विस्तृत जूड़ायुक्त गरदन की ओर होठों के बीच में आँखों के कानों में और कभी कभी हाथों के एकप्रकार के आक्षेप से एक कठोर अबाध्यता का इशारा दिखलाई पड़ता है।

फिर से गुरुजी न गान और कीतन में अधिक मन लगाया। उन्होंने सोचा मीठी गन्ध के उड़ने वाला भौंरा आप ही लौट कर मधुकोष पर स्थिर होकर बैठेगा। हेमन्त के छोटे छोटे दिन गान के मद में फेनिल होकर मानो उमड़ उठे।

किन्तु ओह दामिनी तो पकड़ में ही नहीं आती। गुरु जी ने इसे लक्ष्य करके एक दिन हँसते हुए कहा भगवान शिकार करने के लिए बाहर निकले हैं हरिणी भाग भाग कर इस शिकारके रस को और अधिक गाढ़ी बनाती जा रही है किन्तु करना ही पड़ेगा।

पहले जब दामिनी के साथ हमलोगों का परिचय हुआ तब वह भक्त-मण्डली में प्रत्यक्ष नहीं थी किन्तु इसका हम लोगों ने ख्याल नहीं किया। अब वह जो नहीं है, यही हम लोगों के लिए प्रत्यक्ष हो उठा है। उसको न देख पाना ही झोंकेदार हवा की तरह हमलोगों को इधर-उधर ढकेलने लगा। गुरुजी ने उसकी अनुपस्थिति को अहकार कहकर मान लिया है इसलिए वह उनके अहकार को केवल चोट पहुँचाने लगा—और मैं—मेरे बारे में कुछ कहन की आवश्यकता नहीं है।

एक दिन साहस के साथ गुरुजी ने दामिनी से यथा

सम्भव मृदु मधुर स्वर में कहा दामिनी आज सन्ध्या समय क्या तुमको कुछ फुरसत मिलेगी ? यदि मिले तो

दामिनी ने कहा नहीं।

क्यों बताओ तो ?

मुहल्ले के एक घर में गरी का लड्डू बनाने जाऊँगी।

लड्डू बनाने ? क्यों ?

नन्दीजी के घर विवाह है।

वहाँ क्या तुम्हारी बहुत ही—

हाँ मैं उन लोगों को वचन दे चुकी हूँ।

और कुछ भी न कहकर दामिनी हवा के एक झोंके की तरह चली गयी। शचीश वहीं पर बैठा था वह अवाक् हो गया। कितने ही गुणीमानी विद्वानों ने उसके गुरु के सामने माथा झुकाया है—और यह एक जरासी लड़की इसका ऐसा अकुंठित तेज किसलिए ?

और एक दिन सन्ध्या के समय दामिनी घरपर ही थी। उस दिन गुरुजीने विशेष रूपसे एक बड़े प्रकार की बात छेड़ी। थोड़ी दूर आगे बढ़ते ही उन्होंने हमलोगों के मुँहकी तरफ देखकर एक सूनापन जैसा कुछ अनुभव किया। उन्होंने देखाकि हमलोग अन्यमनस्क हैं। पीछेकी ओर घूमकर देखा कि दामिनी जहा बैठकर कुरते में बटन लगा रही थी वहा वह नहीं है। वे समझ गये कि हमलोग यही बात सोच रहे हैं कि दामिनी उठकर चली गयी। उनके मनमें अन्दर ही अन्दर झुनझुनी की तरह बार बार यह शब्द गूँजने लगा कि दामिनी ने नहीं सुना उनकी बात सुनना ही नहीं चाहा। जो कुछ कह रहे थे उसका आधार ही खो गया है। कुछ देर बाद दामिनी के कमरे के पास जाकर बोले दामिनी यहाँ अकेली

क्या कर रही हो ? उस कमरे में न चलोगी ?

दामिनी ने कहा नहीं कुछ जरूरत है।

गुरुजीने उचककर देखा कि पिंजड़े में एक चील है। दो दिन हुए टेलीग्राफके तार से किसीतरह चोट खाकर चील जमीन पर गिर पड़ी थी वहाँ कौओंके दलके बीच से उसका उद्धार करके दामिनी उसे ले आयी थी। उसके बाद से सुश्रुषा चल रही है।

यह तो हुई चील की बात दामिनी ने इसक अलावा एक कुत्तेके बच्चे को भी पाल रखा है उसका रूप भी जैसा है कुलीनता भी उसकी वैसी ही है। वह एक मूर्तिमान रसभग है। करताल की थोड़ी सी आवाज सुनते ही वह आकाशकी ओर मुँह उठाकर विधाता क पास आतस्वर में नालिश करने लगता है उसकी नालिश को विधाता सुनते नहीं इसीसे कुशल है। किन्तु जो लोग सुनते हैं उनका धैर्य नहीं रहता।

एक दिन जब छत के एक कोने में फूटी हुई हाड़ीमें दामिनी फूलके पौधेकी सेवा कर रही थी उसी अवसर पर शचीश ने उसके पास जाकर पूछा, आजकल तुमने वहाँ जाना एकदम छोड़ दिया है क्यों ?

कहां ?

गुरुजीके पास।

क्यों तुम लोगोंको मेरी क्या आवश्यकता है ?

हमलोगों को कुछ आवश्यकता नहीं है किन्तु तुमको तो आवश्यकता है।

दामिनी जल उठी और बोली, कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं।

शचीश स्तम्भित होकर उसके मुँहकी तरफ देखन लगा।

कुछ देर बाद बोला देखो तुम्हारा मन अशान्त हो उठा है, यदि शान्ति पाना चाहती हो तो—

तुमलोग मुझे शान्ति दोगे ? दिन रात मन में केवल तरंगे उठा उठाकर पागल बना बैठे हो। तुमलोगोंको शान्ति कहाँ है ? तुम लोगोंसे हाथ जोड़ती हूँ मुझे क्षमा करो मैं शान्ति में ही थी और शान्ति में ही रहूँगी।

शचीश ने कहा ऊपर ही ऊपर तरंगें देख रही हो जरूर धैर्य धारण करके डुबकी लगाने पर देखोगी कि वहाँ पूर्ण शान्ति है।

दामिनी ने दोनों हाथ जोड़कर कहा अजी तुम लोगों की दोहाई ! मुझसे और डूबने के लिए मत कहो। मेरी आशा तुमलोग छोड़ दो तभी बचूँगी।

२

नारी के हृदय का रहस्य जानने लायक अनभिज्ञता मुझे नहीं हुई। नितान्त ऊपर से और बाहर से जो कुछ देखा उससे मुझको यही विश्वास पैदा हुआ है कि जहाँ पर स्त्रियाँ दुख पायँगी वहीं पर वे हृदय देने को तैयार रहती हैं। ऐसे पशु के लिए वे अपनी वरमाला गूँथती हैं जो उस माला को कामना के कीचड़ में रौंदकर बीभत्स कर सके और यदि ऐसा नहीं होता तो वे किसी ऐसे मनुष्य की ओर लक्ष्य करती हैं जिसके गले तक उनकी माला पहुँचती ही नहीं जो मनुष्य भाव की सूक्ष्मता में इस तरह विलीन हो गया है मानों वह है नहीं। स्त्रियाँ स्वयम्वरा होते समय उनको ही वर्जन करती हैं जो हम लोगों में मध्यवर्ती मनुष्य हैं जो स्थूलता और सूक्ष्मता को एक में मिलाकर बने हैं जो नारी को नारी ही कहकर जानते हैं अर्थात इतना ही जानते हैं कि वे मिट्टी की बनी खेलने की गुड़िया नहीं हैं और फिर सुर से बनी वीणा की झनकार भी नहीं हैं। स्त्रियाँ हमलोगोंको त्याग देती हैं क्योंकि हम लोगों में न तो लुब्ध लालसा का दुर्दान्त मोह है और न तो है विभोर भावुकता की रंगीन माया हम लोग प्रकृति के कठिन पीड़न में उनको तोड़कर न तो फेंक ही सकते हैं और न तो भाव के उत्ताप में गलाकर अपनी कल्पना के साँचें में तैयार कर खड़ा करना ही जानते हैं वे जो कुछ हों हमलोग उनका

ठीक वही कह कर जानते हैं—इसीलिए वे यद्यपि हमें पसन्द करती हैं किन्तु प्यार नहीं कर सकतीं हमींलोग उनके यथार्थ आश्रय हैं हमलोगों की ही निष्ठा के ऊपर वे निर्भर रह सकती हैं, हमलोगों का आत्मोत्सर्ग इतना सरल है कि उसका कुछ मूल्य है इस बात को वे भूल ही जाती हैं। हमलोग उनके पास से केवल इतना ही बकसीस पाते हैं कि जरूरत पड़ते ही वे हमलोगों को व्यवहार में लगाती हैं और हो सकता है कि वे हमारी श्रद्धा भी करती हों लेकिन हम जानते हैं यह क्षोभ की बातें हैं खूब सम्भव है यह सभी सत्य भी न हो पर जहाँ हमलोग कुछ नहीं पाते वहीं पर हमलोगों की जीत है कम से कम यही बात कहकर अपने को हम सान्त्वना देते हैं।

दामिनी गुरुजीके पास आती नहीं इसीलिए कि उनके प्रति वह नाराज है। दामिनी शचीश की उपेक्षा ही करती चलती है केवल इसलिए कि उसके प्रति उसके मन का भाव ठीक विपरीत प्रकार का है। अब उसके नजदीक मैं ही एकमात्र ऐसा मनुष्य हूँ जिसे लेकर राग या अनुराग का कोई झंझट ही नहीं है। इसीलिए दामिनी मेरे निकट अपनी बीती हुई बातें आज कल की बातें और मुहल्ले में कब क्या देखा—क्या हुआ वही सब समान्य बातें सुयोग पाते ही अनर्गल बक जाती है। हम लोगों के कमरे के सामने थोड़ी सी ढकी हुई जो छत है वहीं पर बैठकर सरौते से सुपारी काटते काटते दामिनी जो सो बकती है—पृथ्वी के बीच में यह जो अति सामान्य घटना है वह आजकल शचीश की भावना में, भूली हुई नजरमें इसतरह पड़ेगी ऐसा मैं सोचभी न सकता था। हो सकता है कि घटना सामान्य न हो लेकिन मैं जानता था कि शचीश

जिस मुल्क में वास करता है वहा पर घटना कहकर कोई उप सग ही नहीं है वहा पर ह्लादिनी सन्धिनी और योगमाया जो घटित कर रही हैं वह एक नित्य लीला है अत यह ऐतिहासिक नहीं है। वहाक चिर यमुना तीर के चिर धीर समीर की बांसुरी जो लोग सुन रहे हैं वे जो आस पास के अनित्य व्यापार को आँखसे देखते हो या कानसे सुनते हों एकाएक ऐसा खयाल नहीं होता। कमसे कम गुफा से लौट आनेके पहले शचीश के आंख और कान इसकी अपेक्षा बहुत कुछ बन्द थे।

मेरी भी कुछ त्रुटि हो रही थी। मैंने बीच बीच में हमलोगों की रसालोचनाकी बैठक में गैरहाजिर रहना शुरू कर दिया था। यह शून्यता शचीश की पकड़ में आने लगी। एक दिन उसने आकर देखा कि ग्वाले के घर से एक हाँड़ी दूध खरीद लाकर दामिनी के पालतू नेवले को पिलाने के लिए मैं उसके पीछे पीछे दौड़ रहा हूँ। कैफियत की दृष्टि से यह काम बहुत ही अचल है सभा भग होने तक इसे स्थगित रखने से नुकसान नहीं होता यहा तक कि नेवले की क्षुधानिवृत्ति का भार स्वय नेवले पर छोड़ देने से जीव के दया में कोई त्रुटि नहीं होती और न मैं अपनी रुचिका परिचय भी दे सकता। इसीकारण एकाएक शचीश को देखकर घबड़ा उठना पड़ा। हाड़ी को उसी स्थान पर रखकर आत्म मर्यादा के उद्धार के माग में खिसक जाने की चेष्टा करने लगा।

किन्तु दामिनी का व्यवहार आश्चयजनक हुआ। वह जरा भी कुठित नहीं हुई, बोली कहाँ जा रहे हैं श्री विलास बाबू?

मैं माथा खुजलाकर बोला—एकबार—

दामिनी बोली उनलोगोंका गाना अबतक समाप्त हो गया होगा। आप बैठिये न।

शचीश के सन्मुख दामिनी का ऐसा अनुरोध सुनकर मेरे दोनों कान झनझनाने लगे।

दामिनी बोली नेवले को लेकर दिक्कत बढ़ गयी है—कल रात के समय मुहल्ले के मुसलमानों के घर से एक मुर्गी चुराकर भक्षण कर गया है। इसे खुला छोड़ रखने से न बनेगा। श्रीविलाश बाबूको मैंने एक बड़ी टोकरी खरीद लाने को कहा है तुमको उसी में बन्द करके रखना पड़ेगा।

नेवले को दूध पिलाना नेवले के लिए टोकरी खरीद लाना आदि कामों के उपलक्ष्यमें श्रीविलास बाबू के सेवकाई का दामिनी ने मानो शचीश के निकट कुछ उत्साह के साथ ही प्रचार किया। जिस दिन गुरुजी ने मेरे सामने शचीश को तम्बाकू चढ़ाने को कहा था उस दिन की बात मुझे याद पड़ गयी। दोनों एक ही चीज हैं।

शचीश कुछ भी न कहकर कुछ तेजी से चला गया। दामिनी के मुह की तरफ नजर उठाकर देखा, शचीश जिस तरफ चला गया उधर ताकते हुए उसकी आखोंसे बिजली छिटक पड़ी—वह मनही मन कठोर हँसी हँस पड़ी।

उसने क्या समझा यह तो वही जानती है किन्तु अब यह हुआ कि अत्यन्त साधारण बहाने से दामिनी मुझे तलब करने लगी। और एक एक दिन कोई एक मिष्टान्न तैयार करके विशेषरूप से वह मुझको ही खिलाने लगी। मैंने कहा शचीश भैया को।

दामिनी ने कहा उनको खाने के लिए बुलाना तंग करना होगा।

शचीश बीच बीच में देख गया कि मैं खाने के लिए बैठा हूँ।

तीनोंमें से मेरी ही दशा सबसे खराब है। इस नाटक के जो दो मुख्य पात्र हैं उनके अभिनय का आगा पीछा ही एकदम आत्मगत है—मैं प्रकटरूप में हूँ इसका एक मात्र कारण यह है कि मैं अत्यन्त गौण हूँ। इससे कभी कभी अपने भाग्य के ऊपर क्रोध भी होता है फिर भी उपलक्ष्य सजाकर जो कुछ नकद बिदाई जुटती है उसका लोभ भी मैं सम्हाल नहीं सकता ऐसी मुश्किल में भी पड़ गया हूँ।

३

कुछ दिनों तक शचीश पहले की अपेक्षा और भी अधिक उत्साह के साथ करताल बजाता हुआ और नाच नाचकर कीर्तन करता हुआ घूमता रहा। उसके बाद एक दिन मेरे पास आकर वह बोला दामिनी को हमलोगों के साथ रखने से काम न चलेगा।

मैंने कहा क्यों ?

वह बोला प्रकृति का संसर्ग हम लोगों को एकदम छोड़ देना पड़ेगा।

मैंने कहा यदि ऐसा हो तो मैं यही समझूँगा कि हम लोगों की सधना में कोई बहुत बड़ी गलती है।

शचीश मेरे मुह की तरफ आँखें उठाकर ताकने लगा।

मैंने कहा तुम जिसको प्रकृति कहते हो वह तो एक यथार्थ वस्तु है, तुम्हारे अलग करदेने से भी वह ससार से तो अलग नहीं होती। अतएव वह मानो है ही नहीं इसतरह की भावना

लेकर यदि साधना करते रहोगे तो अपने आपको धोखा देना ही होगा किसी दिन वह धोखा इस तरह पकड़ा जायगा कि भाग निकलने का रास्ता न पाओगे।

शचीश ने कहा थाय का तक रहने दो। मैं तो काम की बात कह रहा हूँ। साफ तौर से ही दिखाई पड़ रहा है कि स्त्रिया प्रकृति की अनुचरी हैं प्रकृति का हुक्म तामील करने के लिए ही तरह तरह की सजावटों से सुसज्जित होकर वे मनको भुलाने की चेष्टा कर रही हैं। चेतना को आविष्ट न कर सकने से वे अपने मालिक का काम पूरा नही कर सकतीं इसीलिए चेतना को खुलासा रखन के लिए प्रकृति की इन दूतिकाओं से जैसे भी हो सके बचकर चलना चाहिये।

मैं कुछ कहने ही जा रहा था कि बीचमें ही रोककर शचीश बोला भाई विश्री प्रकृति की माया तुम नहीं देख पा रहे हो क्योंकि उसी माया के फन्दे में तुमने अपने आपको जकड़ रखा है। जिस सुन्दर रूप को दिखाकर आज उसन तुमको भुला रखा है प्रयोजन का दिन समाप्त हो जान पर ही वह अपने उस रूप के नकाब को उतार कर फेंक देगी जिस तृष्णा के चश्मे से तुम इस रूपको विश्वकी समस्त वस्तुओं से बड़ा मानकर देख रहे हो। समय बीतते ही वह उस तृष्णा को एकदम ही लुप्त कर देगी। जहाँ पर मिथ्या का जाल इसतरह स्पष्ट फैलाया हुआ है वहां बहादुरी करने के लिए जाने की क्या जरूरत है?

शचीश ने कहा तुमलोग गुरु को नहीं मानते हो इसीलिए यह भी नहीं जानते कि गुरु ही हमलोगों के लिए पतवार हैं। साधना को अपने खयाल के अनुसार गढ़ना चाहते हो? अन्तमें मरोगे।

यह बात कहकर शचीश गुरुजी के कमरे में चला गया और उनके पैरों के पास बैठकर पैर दबाने लगा। उसी दिन शचीश ने गुरुजी के लिए तम्बाकू चढ़ाकर दिया और उनके निकट प्रकृति के खिलाफ नालिश दायर कर दी।

एक दिन तम्बाकू से बात पूरी नहीं हुई। बहुत दिनों से लगातार गुरुजीने अनेक चिन्तायें कीं। दामिनी को लेकर वे बहुत भुगत चुके हैं। अब देख रहे हैं कि इसी एक मात्र लड़की ने उनके भक्तों के अनवरत भक्तिस्रोत के बीच में खूब अच्छी तरह से एक भवरी की सृष्टि कर दी है। किन्तु शिवतोष घरद्वार-सम्पत्ति समेत दामिनी को उनके हाथों में इस तरह सौंप गया है कि उसको अब कहा हटावेंगे यही सोचना मुश्किल है। उससे कठिन यह है कि गुरुजी दामिनी से भय करते हैं।

इधर शचीश उत्साह की मात्रा को दुगुना चौगुना बढ़ाकर गुरुजी के पैर दबाकर तम्बाखू चढ़ाकर किसीतरह भी यह बात न भूल सका कि प्रकृति उसकी साधना के पथ में खूब मजे से अड्डा जमाकर बैठी हुई है।

एक दिन मुहल्ले में गोविन्दजी के मन्दिर में एक इस नामी विदेशी कीर्तन वाले का कीर्तन हो रहा था। बैठक खतम होने में बहुत रात होगी। मैं शुरू में ही चट से उठकर चला आया, मैं जो नहीं हूँ यह बात उस भीड़ में किसी की पकड़ में आयगी इसका खयाल मैंने नहीं किया।

उस दिन सन्ध्या समय दामिनी का हृदय खुल गया था। जो सब बातें इच्छा करने पर भी नहीं कही जा सकतीं मुँहमें आकर रुक रुक जाती हैं—वे भी उस दिन बड़ी सरलता और सुन्दरता के साथ उसके मुँह से बाहर हुईं। कहते कहते उसने

मानों अपने मनकी अनेक अज्ञात अंधेरी कोठरियाँ देख लीं। उस दिन अपने साथ आमने-सामने खड़ा होने का एक अवसर दैवात् उसको जुट गया था।

ऐसे समय में शचीश कब पीछे से आकर खड़ा हो गया हमलोग जान भी न सके। उस समय दामिनी की आँखों से आंसू बह रहे थे। फिर भी बात विशेष कुछ नहीं थी। किन्तु उसकी सभी बातें एक नयनाश्रु की गभीरता के भीतर से बहकर आ रही थीं।

शचीश जब आया तब भी कीर्तन की बैठक समाप्त होने में अवश्य ही बहुत देर थी। समझ गया भीतर ही भीतर अबतक उसको केवल धक्का ही लगा है। दामिनी शचीश को एकाएक सामने देखकर जल्दी से आँखें पोछकर उठकर पास वाले कमरे की ओर जाने लगी। शचीश ने कंपित कण्ठ से कहा, सुनो दामिनी एक बात है।

दामिनी धीरे धीरे पुनः आकर बैठ गयी। मैं चले जाने के लिए हिचक ही रहा था कि उसने इस तरह मेरे मुँह की ओर देखा कि मैं और अधिक हिल न सका।

शचीश ने कहा हमलोग जिस प्रयोजन से गुरुजी के पास आये हैं तुम तो उस प्रयोजन से नहीं आयी हो।

दामिनी ने कहा नहीं।

शचीश ने कहा तब तुम इन भक्तोंके बीच क्यों रहती हो?

दामिनी की दोनों आँखें मानों चिनगारी की तरह चमक उठीं। वह बोली, क्यों रहती हूँ? मैं क्या इच्छापूर्वक हूँ? तुम लोगो के ही भक्तोंने इस भक्तिहीना के पैरमें बेड़ी डालकर भक्ति की गारद में रख छोड़ा है। तुमलोगों ने क्या मेरे लिए और कोई रास्ता रख छोड़ा है?

शचीश ने कहा हमलोगों ने तय किया है कि तुम यदि अपने किसी आत्मीया के पास जाकर रहना चाहो तो हम लोग खर्चे आदि का बन्दोबस्त कर देंगे।

तुमलोगों ने तय किया है?

हाँ।

मैंने तय नहीं किया।

क्यों इसमें तुम्हारी कौन सी असुविधा है?

तुमलोगों के कोई भक्त अपने किसी मतलब से एक तरह का बन्दोबस्त करेंगे दूसरे कोई भक्त किसी और ही मतलब से कोई और ही बन्दोबस्त करेंगे बीच में क्या मैं तुमलोगोंके दस पचीस के खेल की गोटी हूँ?

शचीश अवाक् होकर ताकता रह गया। दामिनीने कहा, मैं तुमलोगों को अच्छी लगूगी यह समझकर अपनी इच्छा से तुमलोगों के बीच नहीं आयी हूँ मैं तुमलोगों को अच्छी नहीं लग रही हूँ तो तुमलोगों की इच्छा से मैं जाऊगी भी नहीं कहते कहते मुहपर दोना हाथ से आचल दबाकर वह रो उठी और झटपट कमरे में जाकर उसने दरवाजा बन्द कर लिया।

उस दिन शचीश कीर्तन सुनने नहीं गया। उसी छतपर जमीन के ऊपर चुपचाप बैठा रहा। उस दिन दक्षिण-हवा म दूरस्थ समुद्र की तरगों के शब्द पृथ्वी के हृदय के भीतर की एक रुलाई की तरह नक्षत्रलोक की ओर उठने लगे। मैं बाहर आकर अधेरे में गाँव के निर्जन मार्ग के बीच घूमने लगा।

गुरुजी हमदोनों को जिस रसके स्वर्गलोक में बाँध रखने की चेष्टा में लगे थे आज मिट्टी की पृथ्वी उसे तोड़ डालने के लिए कमर कसकर लग गयी है। इतने दिनों तक उन्होंने रूपक

पात्र में भवनाओं की मदिरा भरकर केवल हमलोगों को पिलायी है अब रूप के साथ रूपक के टक्कर लगने से उस पात्र के उलट कर मिट्टी पर गिर जाने की नौबत आ गयी है। आसन्न विपत्तिका लक्षण उनसे छिपा नहीं रहा।

शचीष आजकल जाने कैसा एक तरह का हो गया है। जिस गुड्डी का तागा टूट गया है उसीकी तरह अब भी हवामें मड़रा रहा है जरूर किन्तु चक्कर खाकर उसके गिर जाने में अब देर नहीं है। जप तप अर्चना आलोचना में बाहर से शचीश का नागा नहीं है किन्तु आँख देखने से मालूम पड़ता है कि भीतर ही भीतर उसके पैर डगमगा रहे हैं।

और दामिनी ने मेरे सम्बन्ध में कुछ अन्दाजा करने का रास्ता नहीं रखा है। उसने जितना ही समझा कि गुरुजी मनही मन डर रहे हैं और शचीश मन ही मन व्यथा पा रहा है उतना ही वह मुझको लेकर और अधिक खींचातानी करने लगी। कभी कभी मैं शचीश और गुरुजी एक साथ बैठकर बातचीत करते रहते तो ऐसे ही समय में दरवाजे के पास आकर दामिनी पुकारकर कह जाती श्री विलासबाबू एकबार आइये तो। श्री विलासबाबू की उसे कौनसी जरूरत है यह भी नहीं बता जाती। गुरुजी मेरे मुंह की ओर ताकन लगते शचीश भी मेरे मुँह की ओर ताकने लगता और मैं उठूँ या न उठूँ करते करते दरवाजे की ओर देखता हुआ झटपट उठकर बाहर चला जाता। मेरे चले जाने पर भी बातचीत जारी रखने की कुछ चेष्टा की जाती किन्तु वह चेष्टा बातचीत से कहीं अधिक हो उठती फिर उसके बाद बात बन्द हो जाती। इसी तरह से एक भारी टूटाफूटा उजड़ा-बिखरा काण्ड होने लगा। किसी हालत से भी कुछ रुकना नहीं चाहता था।

हम दोनों ही गुरुजी के दल के दो प्रधान वाहन हैं ऐरावत और उच्चैश्रवा ही समझ लीजिये—इसीलिए वे हमलोगों की आशा आसानी से नहीं छोड़ सकते। उन्होंने आकर दामिनी से कहा—बेटी दामिनी इसबार मैं कुछ दूर और दुगम स्थान को जाऊगा। यहाँ से हो तुमको लौट जाना होगा।

कहाँ जाऊगी मैं ?

अपनी मौसी के यहाँ।

ऐसा तो मैं न कर सकूँगी।

क्यों ?

प्रथमत वे मेरी अपनी मौसी नहीं। इसके अतिरिक्त उनको कौन सी गरज पड़ी है कि मझे अपने घर में रखेगीं।

जिससे तुम्हारा खच भार उनके ऊपर न पड़े हमलोग उसके लिए—

गरज क्या केवल खच की ही है ? वह जो मेरी देख भाल और खबरदारी करेंगी इसका भार उनके ऊपर नहीं है ?

मैं क्या चिर दिन ही सब समय तुमको अपने साथ रखूँगा ?

इस बात की चिन्ता करने का भार किसीने मेरे ऊपर नहीं दिया। मैंने यह अच्छी तरह समझ लिया है कि मेरी मौसी नहीं है मेरे बाप नहीं हैं मेरा मकान नहीं, पैसा नहीं हैं कुछ भी नहीं है और इसीलिए मेरा भार अयन्त अधिक है यह भार आपने अपनी इच्छा से लिया है। इसको आप दूसरे के कन्धे पर नहीं लाद सकते।

यह कहकर दामिनी वहाँ से चली गयी। गुरुजीने एक लम्बी साँस लेकर कहा, मधुसूदन !

एक दिन दामिनी ने मेरे ऊपर हुक्म जारी किया कि मैं उसके लिए कुछ अच्छी बंगला पुस्तकें ला दूँ। यह कह देने में अत्युक्ति न होगी कि अच्छी पुस्तक कहने का मतलब दामिनी के विचार से भक्तिरत्नाकर नहीं है। मेरे ऊपर अपना किसी तरह का अधिकार दिखाने में वह जरा भी संकोच नहीं करती थी। उसन एक तरह से यह समझ लिया था कि अधिकार दिखाना ही मेरे ऊपर सब से अधिक अनुग्रह करना है। कुछ पेड़ ऐसे होते हैं जिनकी डाल और पत्ती छाँट देने से ही अच्छी दशा में रहते हैं—दामिनी की समझ के अनुसार मैं उसी जाती का मनुष्य हूँ।

मैंने जिस लेखक की पुस्तक मँगवाकर उसे दी वह मनुष्य एकदम पूर्णरूपसे आधुनिक है। उसके लेखों में मनु की अपेक्षा मानवता का प्रभाव बहुत अधिक प्रबल है। पुस्तक का पैकेट गुरुजी के हाथ में जा पड़ा। उन्होंने भौंहें तानकर कहा क्यों जी श्रीविलास, ये सब पुस्तकें किसलिए हैं ?

मैं चुप हो रहा।

गुरुजी ने दो चार पन्ने उलट कर कहा इसमें सात्विकता की गन्ध तो विशेष नहीं मिलती। लेखक को मैं बिलकुल ही पसन्द नहीं करता।

मैंने झट से कह दिया यदि कुछ ध्यान देकर देखियेगा तो सत्य की गन्ध पाइयेगा।

असल बात तो यह है कि अन्दर ही अन्दर विद्रोह जमता जा रहा था। भावना के नशे के अवसाद से मैं एकदम जर्जरित हो रहा था। मनुष्य को ठेलकर केवल मनुष्य की हृदय वृत्तियों को लेकर दिन रात इसप्रकार छेड़छाड़ करने से मुझे जितनी अरुचि होनी चाहिये उतनी हुई है।

गुरुजी थोड़ी देरतक मेरे मुह की तरफ ताकते रहे उसके बाद बोले-अच्छा तब तो एकबार मन लगाकर देखा जाय।— यह कहकर पुस्तकें अपने तकिये के नीचे रख दीं। समझ गया कि इनको वे लौटाना नहीं चाहते।

अवश्य ही आड़ में से दामिनी को इस मामले का आभास मिल गया था। दरवाजे के पास आकर उसने मुझसे कहा— आपको मैंने जो सब पुस्तकें लाने के लिए कहा था वे क्या अबतक नहीं आयीं ? मैं चुप हो रहा।

गुरुजी ने कहा बेटी ये पुस्तकें तो तुम्हारे पढ़ने योग्य नहीं हैं।

दामिनी ने कहा—आप कैसे समझेंगे ?

गुरुजी ने भौहें टेढ़ी करके कहा-तुम्हीं भला कैसे समझोगी ?

मैं तो पहले ही पढ़ चुकी हूँ आपने शायद नहीं पढी है।

तब फिर इसकी क्या जरूरत रह गयी है ?

आपकी किसी जरूरत में तो कहीं कोई रुकावट नहीं पड़ती क्या मुझे ही किसी तरह की कुछ भी जरूरत नहीं पड़ती ?

मैं संन्यासी हूँ यह तो तुम जानती हो।

और मैं सन्यासिनी नहीं हूं यह भी आप जानते हैं। मुझे ये पुस्तकें पढ़ने में अच्छी लगती हैं आप दे दीजिये।

गुरुजी ने तकिये के नीचे से पुस्तकें निकालकर मेरे हाथ पर फेंक दीं। मैंने दामिनी को दे दी।

घटना जो घटित हुई इसका परिणाम यह हुआ कि दामिनी जिन पुस्तकों को अपने कमरे में अकेली बैठकर पढ़ती थी अब मुझे बुलाकर उन्हें पढ़कर सुनाने को कहने लगी। बरामदे में बैठकर हमलोगों की पढ़ाई होती है। आलोचना चलती है। शचीश सामने से बार बार आता जाता है सोचता है कि बैठ जाय पर बिना कहे बैठ नहीं सकता।

एक दिन पुस्तक में मजेदार बात मिली सुनकर दामिनी खिलखिलाकर हँसती हुई अस्थिर हो उठी। हमलोग जानते थे कि मन्दिर में आज मेला लगा है शचीश वहीं गया है। हठात् देखा कि पीछे के कमरे का दरवाजा खोलकर शचीश बाहर निकला और हमलोगों के ही साथ बैठ गया।

उसी क्षण दामिनी का हँसना एकदम बन्द हो गया। मैं भी हक्काबक्कासा हो गया। सोचने लगा कि जो भी हो शचीश से कुछ बातचीत तो करूँ किन्तु सोचने पर एक भी बात की याद नहीं आयी पुस्तक के पन्ने ही केवल चुपचाप उलटने लगा। शचीश जिसतरह हठात् आकर बैठ गया था उसी तरह हठात् उठकर चला गया। उसके बाद उस दिन हमलोगों का और पढ़ना न हो सका। शचीश शायद यह न समझ सका कि दामिनी और मेरे बीच जिस परदे के न रहने के कारण वह मुझसे द्वेष करता है वास्तव में वही परदा मौजूद है, इसीलिए मैं उससे द्वेष करता हूँ।

उस दिन शचीश ने गुरुजी से जाकर कहा कुछ दिनों के लिए मैं अकेले समुद्र के किनारे घूम आना चाहता हूँ। एकाध सप्ताह के अन्दर ही लौट आऊँगा।

गुरुजी ने उत्साह के साथ कहा बहुत अच्छी बात है जाओ।

शचीश चला गया। दामिनी ने मुझे फिर पढ़ने के लिए नहीं बुलाया और किसी दूसरे काम क लिए जरूरत भी नहीं पड़ी। उसको मुहल्ले की लड़कियों से भेंट मुलाकात करने के लिए जाते भी नहीं देखा। वह कमरे में ही रहती है उस कमरे का दरवाजा बन्द रहता है।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन गुरुजी दोपहर के समय सो रहे थे मैं छतके बरामदे में बैठकर चिट्ठी लिख रहा था। ऐसे ही समय में शचीश ने एकाएक आकर मेरी ओर न देखकर दामिनी के बन्द दरवाजे को खटखटा कर पुकारा—दामिनी दामिमी।

दामिनी उस समय दरवाजा खोलकर बाहर निकल आयी। शचीश की यह कैसी सूरत? प्रचण्ड तूफान का थपेड़ खाये हुए फटे पाल और टूटे मस्तूलवाले जहाज की तरह अव्यवस्थित मस्तिष्क है, दोनों आँखें मलीन हैं बाल बिखरे हुए हैं, मुँह सूख गया है कपड़े मैले हैं।

शचीश ने कहा, दामिनी तुमको चले जाने के लिए कहा था—यह मेरी भूल थी। मुझे माफ करो।

दामिनी ने हाथ जोड़कर कहा—आप यह कैसी बात कह रहे हैं?

नहीं मुझे माफ करो। अपनी ही साधना की सुविधा के लिए तुमको इच्छानुसार छोड़ सकता हूँ या रख सकता हूँ इतने बड़े अपराध की बात मैं कभी और मन में भी न लाऊँगा—किन्तु तुमसे मेरा एक अनुरोध है, तुमको उसको रखना ही पड़ेगा।

दामिनी ने उसी दम झुककर शचीश के दोनों पैर छूकर कहा—मुझे तुम आज्ञा दो।

शचीश बोला, तुम हमलोगों से सहयोग करो, इस तरह दूर दूर न रहा करो।

दामिनी न कहा, सहयोग करूँगी। मैं कोई अपराध न करूँगी।—यह कहकर उसने फिर झुककर पैर छूकर शचीच को प्रणाम किया और फिर कहा—मैं कोई अपराध न करूँगी।

५

पत्थर फिर गल गया। दामिनी में जो असहनीय दीप्ति थी उसका प्रकाशमात्र रह गया ताप नहीं रहा। पूजा अर्चना में मधुरता का फूल खिल उठा। जब कीर्तन मण्डली की बैठक जमती गुरुजी हमलोगों को लेकर जब आलोचना करने बैठते जब वे गीता या भागवत की व्याख्या करते, उस समय दामिनी कभी क्षणभर के लिए भी अनुपस्थित नहीं रहती थी। उसकी साजसज्जा में भी परिवर्तन हो गया। फिर से उसने अपनी तसर की साड़ी पहिनना शुरू किया। दिन में जब भी वह दिखाई पड़ती मालूम होता मानो वह अभी स्नान करके आयी है।

गुरुजी के साथ व्यवहार में ही उसकी सब से बढ़कर कठिन परीक्षा है। वहाँ जब वह उपस्थित होती तब उसकी आँखों के कोने में मैं एक रुद्र तेजकी झलक देख पाता। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि गुरुजी का कोई हुक्म वह मनमें जरा भी सह नहीं सकती थी किन्तु उनकी सभी बातों को उसने इतनी दूर तक चुपचाप मान लिया था कि एक दिन वे उससे बंगला के उस विषम आधुनिक लेखक की रचना के विरुद्ध साहस करके आपत्ति प्रकट कर सके थे। दूसरे दिन उन्होंने देखा कि उनके दिन के समय के विश्राम करने के बिस्तर के पास कुछ फूल पड़े

हुए हैं ये फूल उस लेखक की पुस्तक के फटे पन्नों पर सजाये गये हैं।

अनेक बार देखा है जब गुरुजी शचीश को अपनी सेवाके लिए बुलाते तो वही बात दामिनी के लिए सबसे अधिक असहनीय हो उठती। वह किसी तरह ठेलठाल कर शचीश का काम स्वयं करने की चेष्टा करती किन्तु सब समय वह सम्भव नहीं होती थी। इसीलिए शचीश जब गुरुजी की चिलम सुलगाने के लिए फूँक मारता तब दामिनी जी जान से मनही मन जपा करती—अपराध न करूंगी अपराध न करूंगी।

लेकिन शचीश ने जैसा सोचा था वैसा कुछ भी न हुआ। एक बार दामिनी जब इसी तरह नत हुई थी तब शचीश ने उसमें केवल माधुर्य ही देखा था मधुर को नहीं देखा था। इस बार दामिनी स्वयं उसके निकट इस तरह सत्य हो उठी कि गाने का पद तत्व का उपदेश सभी को ठेलकर वह दिखलाई देती है किसी हालत से उसको दबा रखना सम्भव नहीं है। शचीश उसको इतना स्पष्ट देख पाता है कि उसके भाव की खुमारी टूट जाती है। अब वह किसी हालत से भी उसको एक भावरस का रूपक मात्र कहकर नहीं सोच सकता। अब दामिनी गीतों को नहीं सजाती बल्कि गीत ही दामिनी को सजा डालते हैं।

यहाँ पर यह मामूली बात कह रखूँ कि मुझसे दामिनी को अब और कोई प्रयोजन नहीं है।

मेरे प्रति उसकी सभी फरमाइश एकाएक बन्द हो गयी है। मेरे जो कई एक सहयोगी थे उनमें से चील मर चुकी है नेवला भाग गया है, कुत्ते के पिल्ले के अनाचार से गुरुजी नाराज थे,इसलिए दामिनी उसे कहीं छोड़ आयी है। इस तरह

बेकार और संगीहीन हो जाने से मैं फिर से गुरुजी के घर बार में पहले की तरह भर्ती हुआ यद्यपि वहाँ की सारी भक्ति-कीर्तन गाना बजाना मेरे लिए एकदम बुरी तरह से स्वादहीन हो गया था।

६

एक दिन शचीश कल्पना की खुली भट्ठी में पूर्व और पश्चिमके अतीत और वर्तमान के समस्त दर्शन और विज्ञान रस और तत्वों का एकत्रीकरण कर एक अपूर्व अर्क बना रहा था उसी समय दामिनी एकाएक दौड़ती हुई आकर बोली तुम लोग जरा जल्दी चलो।

मैं चटपट उठकर बोला क्या हुआ ?

दामिनी ने कहा नवीन की स्त्री ने शायद जहर खा लिया है। नवीन हमारे गुरुजीके एक शिष्यका आत्मीय है। हमलोगों का पड़ोसी और हमलोगों के कीर्तन के दल का एक गायक है। जाकर देखा उसकी स्त्री तबतक मर चुकी थी। खबर लेने पर मालूम हुआ कि नवीन की स्त्रीने अपनी मातृहीना भगिनी को अपने पास लाकर रखा था। ये लोग कुलीन हैं इसलिए

उपयुक्त पात्र का मिलना कठिन है। लड़की देखने में अच्छी है। नवीन के छोटे भाई को लड़की पसन्द है और वह उससे विवाह करेगा। वह कलकत्ते में कालेज में पढ़ता है और कई महीन बाद परीक्षा देकर आगामी आषाढ़ महीने में वह विवाह करेगा ऐसी बात थी। ऐसे समय नवीन की स्त्री के निकट यह बात प्रकट हो गयी कि उसके पति और उसकी भगिनी में परस्पर आसक्ति पैदा हो गयी है। तब अपनी भगनी से विवाह करने के लिए उसन पति से अनुरोध किया। बहुत अधिक कहने सुनने की आवश्यकता नहीं हुई। विवाह हो जाने के बाद नवीन की पहली स्त्री ने विष खाकर आत्महत्या कर ली है।

तब और कुछ करने को नहीं रह गया था। हमलोग लौट आये। गुरुजी के पास बहुत से शिष्य आये वे उनको कीर्तन सुनाने लगे—गुरुजी कीतन में योग देकर नाचने लगे।

आज प्रथम रात्रि में ही चाद ऊपर उठ आया है। छत के जिस कोने की तरफ एक इमली का पेड़ झुक गया है उसी जगह के छायाप्रकाश के संगम में दामिनी चुपचाप बैठी थी। शचीश उसके पीछे की तरफ ढके हुए बरामदे में धीरे धीरे टहल रहा था। मुझे डायरी लिखने की आदत है कमरे में अकेला बैठकर लिख रहा था।

उस दिन कोकिल की आँख में नींद नहीं थी। दक्षिणी हवा में पेड़की पत्तियां मानो बोल उठना चाहती हैं उनके

ऊपर चांद की चांदनी झिलमिला उठती है। हठात् एक समय शचीश के न मालूम मन में क्या हुआ वह दामिनी के पीछे आकर खड़ा हो गया। दामिनी चौंक कर माथे पर कपड़ा खींच एकदम से उठकर जाने का उपक्रम करने लगी। शचीश ने पुकारा दामिनी!

दामिनी ठिठक कर खड़ी हो गयी। फिर हाथ जोड़कर बोली प्रभु मेरी एक बात सुनिये।

शचीश ने चुपचाप उसके मुँहकी ओर देखा। दामिनी बोली मुझको यह समझा दो कि तुमलोग दिनरात जिस चीज को लेकर पड़े हुए हो उसकी दुनिया को कौन सी जरूरत है? तुमलोग किसको बचा सके?

मैं कमरे से बाहर आकर बरामदे में खड़ा हो गया। दामिनी बोली तुमलोग दिनरात रस रस की रट लगा रहे हो, इसे छोड़कर और कोई बात नहीं। रस किसे कहते हैं वह तो आज तुमने देख ही लिया? उसका न तो धर्म है न कर्म है न भाई है न स्त्री है न कुल है न मान है उसको दया नहीं है विश्वास नहीं है लज्जा नहीं है शर्म नहीं है। इस निर्लज्ज सर्वनाशक रस के रसातल से मनुष्य की रक्षा करने के लिए तुम लोगों ने कौन सा उपाय किया है।

मैं चुप न रह सका बोल उठा हमलोगों ने स्त्रीजाति को अपनी चौहद्दी से दूर खदेड़ कर निःशंक रस की चर्चा करने का जाल रचा है।

मेरी बातों पर बिल्कुल ध्यान न देकर दामिनी ने शचीश से कहा मैं तुम्हारे गुरु के निकट से कुछ भी नहीं पायी। वे मेरे उन्मादग्रस्त हृदय को एक मुहूर्त के लिए भी शांत न कर सके। आग से आग बुझायी नहीं जाती। तुम्हारे गुरू जिस पथ पर सबको चला रहे हैं उस पथपर धैय नहीं है वीर्य नहींहै शान्ति नहीं है। यह जो लड़की मरी है रस के पथ पर रस की राक्षसी ने ही तो उसके हृदय के रक्त को चूस चूसकर उसको मारा। उसका कैसा कुत्सित स्वरूप है यह तो तुम देखही चुके। प्रभु हाथ जोड़ कर कहती हूँ इस राक्षसी क निकट मेरा बलिदान न करो। मुझको बचाओ यदि मुझको कोई बचा सकता है तो वह तुम हो।

थोड़ी देर के लिए हम तीनों ही चुप रहे। चारों दिशाएँ ऐसी स्तब्ध हो उठीं कि मालूम पड़ा जैसे झिल्ली के शब्द से पाण्डुवर्ण आकाश का सारा शरार अवसन्न होता जा रहा है।

शचीश ने कहा कहो मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?

दामिनी ने कहा तुम्हीं मेरे गुरु हो जाओ। मैं और किसी को भी न मानूगीं। तुम मुझे ऐसा कुछ मन्त्र दो जो इन सभी से कहीं बढ़कर बहुत ऊपर की चीज हो—जिसमें बच जा सकू। मेरे देवता को भी मेरे साथ मत लानो।

शचीश स्तब्ध खड़ा रहकर बोला वही होगा।

दामिनी शचीशके पैरों के निकट जमीन पर माथा रखकर कुछ देर तक प्रणाम करती रही। फिर गुनगुनाती हुई कहने

लगी तुम मेरे गुरु हो तुम मेरे गुरु हो, मुझको सभी अपराधों से बचाओ बचाओ बचाओ।

परिशिष्ट।

फिर एक दिन कानाफूसी तथा समाचार पत्रों में गाली-गलौज हुई और शचीश का मत बदल गया। एक दिन खूब ऊंचे स्वरसे वह चिल्लाता फिरता था कि न तो जात पाँत मानता है न धर्म ही। उसके बाद और एक दिन खूब ऊँचे स्वर से उसने खाना पीना छुआछूत स्नानतपरा पूजा देव देवी कुछ भी मानना बाकी न रखा। उसके बाद और एक दिन इन सभी को मान लेने के अतुलित बोझे को फेंककर वह चुपचाप शान्त होकर बैठ रहा—क्या माना और क्या नहीं माना यह समझ में न आया। केवल यही देखा गया कि पहले की तरह वह फिर से काम में लग गया है किन्तु उसमें झगड़ा या विवाद का कुछ भी सार नहीं है।

और इस बात को लेकर समाचार पत्रों में यथेष्ट विद्रूप और कटूक्ति हो गयी है कि मेरे साथ दामिनी का विवाह हुआ है। इस विवाह का रहस्य क्या है उसे सब लोग न समझेंगे समझने का प्रयोजन भी नहीं है।

श्री विलास

१

यहाँ पर एक समय एक नील कोठी थी। उसका सारा भाग टूट फूट गया है केवल कुछ कमरे बाकी रह गये हैं। दामिनी की मृत देह का दाहसंस्कार करके गांव को लौटते समय यह स्थान मुझे पसन्द आया इसलिए कुछ दिनों के लिए यहीं पर रह गया।

नदी से लेकर कोठी तक जो रास्ता था उसके दोनों किनारे शीशम के पेड़ की कतारे हैं। बगीचे में जाने के लिये भग्न फाटक के दो खम्भे और दीवाल के एक तरफ कुछ हिस्से रह गये हैं किन्तु बगीचा नहीं है। बचे खुचे में एक कोने में कोठी के किसी एक मुसलमान गुमाश्ते की कब्र रह गयी है। कब्र की दरारों में घने जूही और अदार के पेड़ खड़े हैं, नीचे से लेकर ऊपर तक एकदम

फूलों से भरा है। विवाह मण्डप में सालियों की तरह मृत्यु से मजाक करते हुए दक्खिणी हवा में हस हंसकर लहा लोट हो रहे हैं। पोखरी का किनारा टूटकर पानी सूख गया है उसी के नीचे धनिया के साथ साथ किसानों ने चना की भी खेती की है। मैं जब प्रात काल काई लगी हुई भीटे के ऊपर शीशम की छाया में बैठा रहता उस समय धनिया के फूलों की महक से मेरा मस्तिष्क भर जाता है।

बैठे बैठे सोचता यह नील कोठी जो कि आज कसाई खाने में गाय की दो चार हड्डियों की तरह पड़ी हुई है एक दिन सजीव थी। उसने चारो ओर सुख दुख की जो लहरें उठा रखी थीं मालूम पड़ता था कि वह तूफान किसी काल में शान्त न होगा। जिस प्रचण्ड अंग्रेज साहब ने यहाँ पर बैठकर हजारों हजारों गरीब किसानों का रक्त नील करके छोड़ा था उसके सामने में एक सामान्य बंगाली सन्तान बचा हूँ। किन्तु पृथ्वी ने अपनी कमर को हरे आंचल से कसकर अनायास ही उसके साथ उसकी नील कोठी के साथ सबको खूब अच्छी तरह से मिट्टी देकर लीप पोतकर बराबर कर दिया है। जो एकाध बचे खुचे दाग दिखाई दे रहे हैं उनपर पोतने का एक और लेप पड़ते ही एकदम साफ हो जायँगे।

बात पुरानी है मैं उसकी पुनरावृत्ति करने नहीं बैठा हूँ। मेरा मन कह रहा है नहीं जी प्रभातके बाद प्रभात यह

केवलमात्र काल की आँगन लिपाई नहीं है। नील कोठी का वही साहब और उसकी नील कोठी की विभीषिका जरा सी धूल की निशानी की तरह मिट गयी है जरूर—किन्तु मेरी दामिनी।

मैं जानता हूँ मेरी बातों का कोई नहीं मानेगा। शंकराचार्य का मोहमुदगर किसी को रिहाई नहीं करता। मायामयमिद मखल इत्यादि इत्यादि किन्तु शंकराचार्य सन्यासी थे—का तव कान्ता कस्ते पुत्रः—ये सब बातें उन्होंने कही थी—किन्तु इनका अर्थ उन्होंने नहीं समझा। मैं सन्यासी नहीं हूं इसलिए खूब अच्छी तरह जानता हूं कि दामिनी कमल के पत्ते पर ओस की बूंद नहीं है।

किन्तु सुनता हूँ कि गृहस्थ लोग भी ऐसी ही वैराग्य की बातें कहते हैं। कहते होंगे। वे केवल मात्र गृही हैं—वे गँवाते हैं अपनी गृहिणी को। उनकी घर गृहस्थी भी सचमुच माया है उनकी गृहिणी भी वही हैं। यह सब हाथ की बनायी हुई चीजें हैं झाड़ू लगाते ही साफ हो जाती हैं।

मुझको तो गृही होने का समय मिला नहीं और सन्यासी होना मेरे वश में नहीं है यही मेरा कुशल है। इसीलिए मैंने जिसको अपने निकट पाया वह गृहिणी न हुई वह माया न हुई वह सत्य होकर रही वह अन्त तक दामिनी रह गयी। किसकी मजाल जो उसको छाया कहे।

दामिनी को यदि मैं केवलमात्र घर की गृहिणी कहकर

समझता तो फिर इतनी बात न लिखता। उसको मैंने उस सम्बन्ध से कहीं बड़ा करके और सत्य कहकर जाना है। इसीलिए तो सभी बातों को खोलकर लिख सका लोग जो कुछ कहें कहने दो।

माया के संसार में मनुष्य जिस तरह से दिन व्यतीत करता है उसी तरह से दामिनी को लेकर यदि मैं पूरी मात्रा से घर गृहस्थी कर सकता तो तेल लगाकर स्नान करके भोजनोपरान्त पान चबाकर निश्चिन्त रहता। तब दामिनी की मृत्यु के बाद श्वास छोड़ कर कहता संसारोत्यमतीव विचित्र और संसार का वैचित्र्य एक बार पुन परीक्षा करके देखने के लिए किसी एक बुआ या मौसी का अनुरोध शिरोधार्य कर लेता। किन्तु पुराने जूते के जोड़ में पैर जिसतरह पैठता है उसतरह नितान्त सरलता के साथ मैंने अपनी घर गृहस्थी में प्रवेश नहीं किया। शुरु से ही सुख की प्रत्याशा छोड़ दी थी। नहीं यह बात ठीक नहीं है—सुख की प्रत्याशा छोड़ दूँगा इतना बड़ा निकम्मा मैं नहीं हूँ। सुख की आशा निश्चय ही करता किन्तु सुख के लिए दावा करने का अधिकार मैंने नहीं रखा।

क्यों नहीं रखा? इसका कारण मैंने ही दामिनी को बिवाह करने के लिए राजी कराया था। किसी रंगीन चोली के घूंघट के नीचे सहाना रागिनी की तान में तो हमलोगों

की शुभदृष्टि हुई नहीं, जिनके प्रकाशमें सब देख सुन समझ बूझकर ही यह काम किया है।

लीलानन्द स्वामी को छोड़कर जब चला आया तब नून लकड़ी की बात सोचने का समय चला आया। इतने दिन जहाँ जहाँ गया वहा खूब ठूस ठूँस कर गुरुजीका प्रसाद खाया भूख से अधिक अजीर्णता की व्याधि ने ही अधिक भोगाया। संसार में मनुष्य को घर बनवाना घर की रक्षा करना और कम से कम घर भाड़ा करना पड़ता है, यह बात एकदम भूल गया था। हमलोग केवल यही जानते थे कि घरमें सिर्फ रहा जाता है। गृहस्थ जहां कहीं भी हाथ पैर सिकोड़ कर जरासी जगह कर लेगा इस बातको हम लोगोंने सोचा ही नहीं लेकिन हमलोग कहां पर खूब हाथ पैर फैलाकर आराम करेंगे गृहस्थ लोगों के ही दिमाग में यही भावना थी।

तब याद आयी कि बड़े चाचाजी शचीशको अपना घर वसीयत कर गये हैं। वसीयतनामा यदि शचीश के हाथ में रहता तो अबतक भावनाओं के स्रोत में रस की तरँगों में कागज की नाव की तरह डूब गया होता। वह मेरे ही पास था—मैं ही एक्जीक्यूटर था। वसीयतनामे में कुछ शर्तें थीं। वे शर्तें जिसमें कायम रहें इसका भार मेरे ऊपर था। उनमें से प्रधान तीन शर्तें यह हैं—किसी दिन भी इस मकान में पूजा अर्चना न हो सकेगी, नीचे की मंजिल में महल्ले के

मुसलमान और चमारों के लड़कों के लिए रात्रि पाठशाला रहेगी और शचीश की मृत्यु के बाद पूरा मकान इनकी शिक्षा और उन्नति के लिए दान करना पड़ेगा। संसार में पुण्य के ऊपर बड़े चाचाजी को सबसे अधिक क्रोध था। वे पैशाचिकता से इसको अधिक गन्दा समझते थे। बगलवाले मकान की घोरतर पुण्य की हवाको हटाने के लिए ही इस प्रकार की व्यवस्था कर गये थे। वे इसको अँग्रेजी में सेनिटरी प्रिकॉशन कहते थे।

मैंने शचीश से कहा, चलो अब कलकत्ते वाले उसी मकान में रहा जाय।

शचीश ने कहा अभी उसके लिए अच्छी तरह से तैयार नहीं हो सका हूँ।

उसकी बात समझमें नहीं आयी। उसने कहा एक दिन मैंने बुद्धि के ऊपर भरोसा किया देखा वह जीवन के सभी भार को सहन नहीं कर सकती। और एक दिन रसके ऊपर भरोसा किया देखा वहां पर तरला नाम की कोई वस्तु ही नहीं है। बुद्धि भी मेरी अपनी है और रस भी तो वही है। अपन से अपने ऊपर खड़ा होनसे काम नहीं चलता। एक आश्रय जब तक नहीं मिल जाता तब तक मैं शहर में लौटने का साहस नहीं करता।

मैंने पूछा क्या करना होगा बताओ।

शचीश ने कहा तुम और दामिनी दोनों जाओ, मैं कुछ

दिन अकेला ही घूमता रहूँगा। मैं एक किनारा ऐसा देख रहा हूँ इस समय यदि उसकी दिशा खो दूँगा तो फिर खोजकर पाना मुश्किल हो जायगा।

आड़में आकर दामिनी ने मुझसे कहा यह नहीं हो सकता। अकले घूमते रहेंगे उनकी देखभाल कौन करेगा? तबकी जब एकबार अकेले बाहर हुए थे कैसा चेहरा लेकर लौटे थे? उस बातको याद कर मुझे डर मालूम होता है।

सच बात कहूँ? दामिनी की उद्विग्नता से मेरे मनमें जैसे एक क्रोध के भौंरे ने डक मार दिया—जलन होने लगी। बड़े चाचा की मृत्यु के बाद शचीश प्राय दो साल तक अकेला ही घूमता रहा लेकिन मरा तो नहीं। मनका भाव छिपा नहीं रहा—जरा झकार के साथ ही कह डाला।

दामिनी ने कहा श्री विलास बाबू मनुष्यको मरते बहुत समय नहीं लगता है यह मैं जानती हूँ। लकिन जरा भी दुःख क्यों होने दूँगी जब कि हमलोग मौजूद हैं।

हमलोग! बहुवचन का कम से कम आधा अश यह अभागा श्री विलास है। पृथ्वी पर एक दल के मनुष्य को दुख से बचाने के लिए एक दूसरे दल को दुख भोगना पड़ेगा। इस दो तरह की दो जातियों के मनुष्यों को लेकर ससार का कारबार चलता है। मैं जो कौन सी जाति का हूँ, यह दामिनी ने समझ लिया है। जो हो दल में खींच लायी यही मेरा सबसे बड़ा सौभाग्य है।

मैंने शचीश से जाकर कहा अच्छी बात है शहर में अभी न भी जाऊ तो कोई हर्ज नहीं। नदी के किनारे वह जो टुटहा उजड़ा मकान है उसीमें कुछ दिन बिताया जाय। अफवाह है कि उस मकान में भूतों का उत्पात होता है अतः एक मनुष्य का उत्पात वहाँ पर न होगा।

शचीश ने कहा और तुम लोग ?

मैंन कहा हमलोग भूत की तरह ही जहाँ तक हो सकेगा शरीर ढक कर पड़े रहेंगे।

शचीश ने दामिनी क मुँह की आर एक बार देखा। उस देखने में सम्भवत कुछ भय था।

दामिनी ने हाथ जोड़ कर कहा, तुम मेरे गुरु हो। मैं जितनी ही पापिष्ठा क्यों न होऊ मुझको सेवा करने का अधिकार देना।

२

जो भी हो शचीश की इस साधना की व्याकुलता मेरी समझ में नहीं आती। एक दिन तो इस चीज को मैंने हँस कर उड़ा दिया है किन्तु अब और जो भी करूँ हँसी बन्द

हो गयी है। भूलभुलैया का आलोक नहीं यह तो आग है। शचीश के भीतर इसकी ज्वाला को जब देखा तब इसको लेकर बड़े चाचाजी की चेलागिरी करने का और साहस नहीं हुआ। किस भूत के विश्वास से इसका आदि और किस अद्भुत के विश्वास से इसका अन्त है इसे लेकर हर्बर्ट स्पेन्सर के साथ तुलना करने से क्या होगा—स्पष्ट देख रहा हूँ कि शचीश प्रकाश से चमक रहा है उसका जीवन एक ओर से दूसरी ओर तक लाल हो उठा है।

इतने दिनों तक वह नाचकर गाकर रोकर गुरुजी की सेवा करके दिन रात स्थिर था वह अवस्था एक तरह से अच्छी ही थी। हृदय की समस्त चेष्टाओं को प्रत्येक मुहूर्त में फूँक कर वह एकदम अपने को दीवालिया कर देता था। अब स्थिर होकर बैठा है मन को अब और दबा रखने का उपाय नहीं है। अब भाव के सम्भोग के लिए गहिराई में नहीं जाना है अब तो उपलब्धि पर प्रतिष्ठित होने के लिए भीतर ऐसी लड़ाई चल रही है कि उसका मुँह देखकर डर लगता है।

एक दिन मुझसे नहीं रहा गया बोला देखो शचीश मालूम पड़ता है कि तुमको किसी एक अच्छे गुरु की आवश्यकता है, जिसके ऊपर भरोसा करके तुम्हारी साधना सरल हो जायगी।

शचीश कुछ विरक्त होकर बोला चुप रहो विश्री चुप

रहो—सरल को किसकी आवश्यकता होती है? धोखा ही सरल है स य कठिन होता है।

मैंने डरते डरते कहा। सत्यको पाने के लिए ही तो पथ दिखाने का—

शचीश अधीर होकर बोला अजी यह तुम्हारे भूगोल विवरणका सत्य नहीं है मेरे अन्तर्यामी केवल मेरे पथ से ही आया जाया करते हैं—गुरु का पथ गुरुके आगन में ही जाने का पथ है।

इस एक शचीश के मुँह से कितनो बार कितनी उल्टी बातें ही सुनने में आयीं। मैं श्रीविलास हूँ, और बड़े चाचाजी का चेला भी हूँ किन्तु उनको यदि गुरु कहकर सम्बोधित करता तो वे चैला लेकर मारने दौड़ते—इसी शचीशने मुमसे गुरुका पैर तक दबवा लिया और फिर दो दिन न जाते ही वक्तृता झाड़ने लगता। मुझे हँसने का साहस नहीं हुआ गम्भीर हो रहा।

शचीश ने कहा आज मैं स्पष्ट समझ गया कि स्वधर्मे निधन श्रेयः परधर्मो भयावहः शब्द का क्या माने है। और सभी वस्तुएँ दूसरों के हाथ से ली जा सकती हैं कि तु धर्म यदि अपना नहीं होता तो वह मारता है बचाता नहीं। मेरे भगवान दूसरे के हाथ की मुष्टिभिक्षा नहीं हैं यदि उनको पाना है तो मैं ही उनको पाऊंगा नहीं तो निधनं श्रेय।

तक करना मेरा स्वभाव है मैं सहज में छोड़ने वाला पात्र

नहीं हूं। मैंने कहा जो कवि है वह मन के भीतर से कविता पाता है और जो कवि नहीं है वह दूसरे के पास से कविता लेता है।

शचीश ने अम्लानभाव से कहा मैं कवि हू।

बस तक खतम हो गया मैं लौट आया।

शचीश खाता नहीं सोता नहीं कब कहाँ रहता है होश ही नहीं रहता। शरीर प्रतिदिन ही मानो खूब शान दी हुई छुरी की तरह सूक्ष्म होता जा रहा है। देखने से मालूम पड़ता कि अब और बरदाश्त न होगा। फिर भी मैं उसको छेड़ने का साहस नहीं करता। किन्तु दामिनी को यह सहन न होता। भगवान के ऊपर वह बहुत नाराज होती—जो उनकी भक्ति नहीं करता उसी के निकट वे जल्द आते हैं और कवल भक्तों के ही ऊपर इस तरह का प्रतिशोध लिया जाता है? लीलानन्द स्वामी के ऊपर नाराज होकर दामिनी बीच बीच में अपनी भावना खूब कड़ाई के साथ प्रकट कर देती किन्तु भावना के पास तक पहुँचने का उपाय नहीं था।

फिर भी शचीश को समयानुसार नहलाने और खिलाने की चेष्टा करने से बाज न आती। इस बेढंगे बेमेल मनुष्य को नियम में बांध रखने के लिए वह कितनें प्रकार के सोच विचार का जाल रचती उसका कोई ठिकाना नहीं था।

बहुत दिनों तक शचीश ने स्पष्टरूप से इनका कोई प्रतिवाद नहीं किया। एक दिन सबेरे ही वह नदी पार करके उस पार

रेती में चला गया। सूर्य मध्य आकाश में उठा उसके बाद सूर्य पश्चिम की ओर झुका शचीश दिखलाई नहीं पड़ा। दामिनी बिना कुछ खाये प्रतीक्षा करती रही अन्तमें और न रह सकी। भोजन का थाली लेकर घुटने भर पानी में हलकर वह उस पार जाकर उपस्थित हुई।

चारों दिशाए धू धू कर रही हैं। जन प्राणी का कहीं कोई चिन्ह नहीं। धूप जैसा निष्ठुर बालू के लहरें भी वैसी ही हैं वे सब मानों शून्यता के पहरेदार हैं गेंड़ली डालकर सब बैठे हुए हैं।

जहा पर किसी पुकार की कोई सुनवाई किसी प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है ऐसे एक सीमाहीन पीत सफेदी के बीच में खड़ी होकर दामिनी का हृदय एकाएक बैठ गया। यहां पर मानो सब मिटमिटा कर एकदम जड़ की उस सूखी सफेदी में जा पहुँचा है। पैर क नीचे कवल पड़ा हुआ है, एक नहीं। उसमें न तो शब्द है और न गति है उसमें न तो रक्त की लालिमा है न तो पेड़ पौधों की हरियाली है न तो आकाश की नीलिमा है और न तो मिट्टी का गेरुआ है। मानो एक मुर्दे के मस्तक पर प्रकाण्ड ओष्ठहीन हसी बिखर उठी है मानो दया-हीन तप्त आकाश के निकट एक विपुल शुष्क जिह्वा ने एक बड़ी तृष्णा की दरखास्त फैला रखी है।

किस ओर जायगी सोच ही रही थी कि एकाएक बालू के ऊपर पैरों क निशान दिखलाई पड़े। उस निशानी को पकड़

कर चलते चलते जिस स्थान पर वह पहुँची वहा पर एक झील सी है। उसक किनारे किरारे भीगी मिट्टी क ऊपर असंख्य पक्षियों के पदचिह्न अंकित हैं। यहीं पर बालू के करारे की छाया में शचीश बैठा हुआ है। सामने का पानी एकदम नील है किनारे किनारे चचल रंगबिरंग के पक्षी अपने पूँछ नचा नचाकर श्वेत और श्याम डैनेकी झलक दिखला रहे हैं। कुछ दूर पर चकवा चकई के दल खूब शोरगुल करते करते किसी हालत से भी पीठके परों को सम्पूर्ण इच्छानुसार साफ नहीं कर पा रहे हैं। दामिनी के करारे पर खड़ी होते ही वे बोलते बोलते पख फैलाकर उड़ गये।

दामिनी को देखकर शचीश बोल उठा—यहां पर क्यों?

दामिनी ने कहा खाना लायी हूँ।

शचीश ने कहा नहीं खाऊ गा।

दामिनी ने कहा बहुत देर हो गयी है।

शचीश न केवल कहा नहीं।

दामिनी ने कहा न हो तो मैं जरा बैठ जाऊ तुम कुछ देर बाद—

शचीश बोल उठा आह क्यों मुझको तुम—

हठात् दामिनी का चेहरा देखकर वह रुक गया। दामिनी और कुछ नहीं बोली, थाली हाथ में लेकर चली गयी। चारो ओर शून्य बालू रात्रिमें बाघ की आँख की तरह झलकने लगी।

दामिनी की आँखों में आग जितनी सरलता से जल उठती है पानी उतनी सरलता से नहीं गिरता। किन्तु उस दिन जब उसको देखा तो वह जमीन पर पैर फैलाये बैठी हुई थी आँखों से पानी गिर रहा था। मुझको देखकर उसकी रुलाई जैसे बांध तोड़कर उमड़ पड़ी। मेरे हृदय के अन्दर न जाने कैसा होने लगा। मैं एक तरफ बैठ गया।

किंचित स्वस्थ होने पर मैंने उससे कहा शचीश के शरीर के लिए तुम इतनी चिन्ता क्यों कर रही हो?

दामिनी बोली और किसके लिये मैं चिन्ता कर सकती हूँ बतलाओ? और सभी की चिन्ताओं का तो वे स्वयं ही चिन्तन कर रहे हैं। मैं क्या उनका कुछ समझ पाती हूँ या मैं उनका कुछ कर सकती हूं?

मैंने कहा देखो मनुष्य का मन जब खूब जोर के साथ किसी एक पर जा कर जमता है तब उसके शरीर का समस्त प्रयोजन आप ही आप कम हो जाता है। इसीलिए तो बड़े दुख या बड़े आनन्द में मनुष्य की भूख प्यास नहीं रहती इस समय शचीश के मन की जैसी अवस्था है उसमें उसके शरीर के प्रति यदि ध्यान न भी दो तो उसकी कोई क्षति न होगी।

दामिनी बोली मैं जो स्त्री जाति हूँ—इसी शरीर को ही तो देह और प्राण से तैयार करना हम लोगों का स्वधर्म हैं। वह तो एकदम से स्त्री जाति की अपनी कीर्ति है। इसलिए जब

देखती हूँ कि शरीर कष्ट पा रहा है तब बड़ी सरलता से हम लोगों का मन रो उठता है।

मैंने कहा इसीलिए जो लोग केवल मन को ही लेकर रहते हैं शरीर के अभिभावक तुमलोगों को वे लोग आख से भी नहीं देख पाते।

दामिनी इतरा कर बोल उठी देख क्यों नही पाते। वे इस तरह से देखते हैं कि वह एक अनासृष्टि है।

मैंने मन ही मन कहा उसी अनासृष्टि के ऊपर तो तुमलोगों के लोभ की सीमा नहीं है।—अरे ओ श्रीविलास उस ज न्ममें जिससे अनासृष्टि वालों के दल में जन्म ले सको ऐसा पुण्य करो।

३

उस दिन नदी किनारे शचीश ने दामिनी को ऐसी गहरी चोट दी कि जिसका नतीजा यह हुआ कि दामिनी की उस कातर दृष्टि को शचीश अपने मन से दूर न कर सका। उसके बाद कुछ दिनों तक वह दामिनी के प्रति किंचित विशेष यत्न दिखलाते हुए अनुताप का व्रत यापन करने लगा। बहुत दिनों

तक तो उसने हमलोगों के साथ खुलकर बात ही नहीं की अब वह दामिनी को पास बुलाकर उसके साथ आलाप करने लगा। जो सब बातें उसके अनेक ध्यान और अनेक चिन्ताओं की थीं वेही उस के आलाप के विषय के अन्तगत थीं।

दामिनी को शचीश की उदासीनता का भय नहीं था किन्तु वह इस प्रकार के यत्न से बहुत भयभीत होती थी। वह जानती थी कि इतना बर्दाश्त न होगा। क्योंकि इसका मूल्य बहुत ज्यादा है। एक दिन हिसाब की ओर जभी शचीश की नजर पड़ेगी देखेगा कि खर्च बहुत अधिक पड़ रहा है और उसी दिन आफत आ पड़ेगी। शचीश जब अत्यन्त भले लड़के की तरह खूब नियमानुसार स्नानाहार करता तो दामिनी का हृदय धड़कने लगता उसे न जाने कैसी लज्जा मालूम होने लगती है। शचीश के अबाध्य होने से ही वह मानो अपना छुटकारा समझती थी। वह अपने मन में कहती उस दिन तुमने मुझको दूर कर दिया था अच्छा ही किया था। मेरा यत्न करना यह तो तुम्हारा अपने को दण्ड देना है। इसे मैं किस तरह बरदाश्त कर सकूँगी ?—दामिनी ने सोचा हटाओ जाने दो देखती हूँ यहां पर भी लड़कियों के साथ मेल जोल बढ़ाकर मुझको फिर से मुहल्ले मुहल्ले घूमना पड़ेगा।

एक दिन रात को हठात् पुकार हुई विश्री, दामिनी!— उस समय रात्रि में एक बजा था कि दो बजे थे शचीश को

यह खयाल ही न था। रात में शचीश क्या क्या काण्ड करता है वह मैं नहीं जानता किन्तु इतना निश्चित था कि उसके उत्पात से इस भुतहे मकान के भूत लोग व्याकुल हो उठे है।

हम लोगों ने नींद से चटपट जागकर बाहर आकर देखा कि शचीश मकान के सामने वाले चबूतरे के ऊपर अंधेरे में खड़ा है। वह कह उठा मैंने अच्छी तरह से समझ लिया है। मन में जरा भी सन्देह नहीं है।

दामिनी धीरे धीरे उस चबूतरे पर जाकर बैठ गयी शचीश भी उसका अनुसरण करते हुए अन्यमनस्क भाव से बैठ गया। मैं भी बैठा।

शचीश बोला जिस ओर मुँह करके वे मेरी ओर आ रहे हैं, मैं यदि उसी ओर मुह करके चलता रहूँ तो उनके निकट से केवल दूर हटता जाऊगा। मैं ठीक उलटे मुँह की ओर जब चलूँगा तभी तो जाकर मिलन होगा।

मैं चुप होकर उसकी झल झल करती हुई आँखों की ओर देखता रहा। उसने जो कुछ कहा वह रेखागणित के हिसाब से तो ठीक है पर मामला क्या है?

शचीश कहता गया वे रूप को प्यार करते हैं इसलिये केवल रूप की ओर उतरते आ रहे हैं। हमलोग केवल रूप को ही लेकर तो रह नहीं सकते इसलिये हमलोगों को अपरूप की ओर दौड़ना पड़ता है। वे मुक्त हैं इसलिए उनकी लीला बन्धन में है, हम लोग बन्धन में हैं इसलिए हमलोगों का

आनन्द मुक्ति में है। इस बात को न जानने से ही हम लोगों को इतना दुख है।

तारे जिस तरह निस्तब्ध रहते हैं हमलोग भी उसी तरह निस्तब्ध होकर बैठे रहे। शचीश ने कहा दामिनी क्या नहीं समझ रही हो ? जो गाना गाता है वह आनन्द की ओर से रागिनी की ओर जाता है और जो गाना सुनता है वह रागिनी की ओर से आनन्द की ओर जाता है। एक आता है मुक्ति से बन्धन में और एक जाता है बन्धन से मुक्ति में तभी तो दोनों पक्ष का मिलन होता है। वे गा रहे हैं और हम लोग सुन रहे हैं। बाँधते बाँधते सुनाते हैं और हमलोग खोलते खोलते सुनते हैं।

दामिनी शचीश की बातों को समझ सकी या नहीं यह मैं नहीं कह सकता, किन्तु वह शचीश को पहचान सकी इसमें सन्देह नही। अपनी गोद के ऊपर दोनों हाथों को जोड़े चुप चाप बैठी रही।

शचीश ने कहा अबतक मैं अन्धकार के एक कोने में चुप चाप बैठा हुआ उस उस्ताद का गाना सुन रहा था सुनते सुनते एकाएक सब समझ में आ गया। और न रह सका इसलिए तुम लोगों को मैंने बुलाया है। इतने दिनों तक मैंने उनको अपनी तरह बनाने में लगकर केवल धोखा खाया। हे मेरे प्रलय ! अपने को मैं तुम्हारे बीच चूर चूर करता रहूँगा—चिर-काल तक मेरा बन्धन नहीं है इसलिए किसी बन्धन को पकड़

कर रख नहीं सकता —और केवल तुम्हारा ही ब धन है इस लिए अन न्त काल से तुम सृष्टि के ब धन को छुड़ा न सके। रहो मेरे रूप को लेकर तुम रहो मैं तुम्हारे अपरूप के बीच डुबकी लगता हूँ।

असीम तुम मेरे हो तुम मेरे हो —यह कहते कहते शचीश उठकर अधेरे में नदी की ओर चला गया ?

५

उसी रात के बाद से शचीश ने फिर पहले की चाल पकड़ी। उसके नहाने खाने का कोई ठिकाना नहीं रहा। कब उसके मनकी तरगे प्रकाश की ओर उठतीं और कब वे अन्ध कार की ओर उतर जातीं यह समझ में नहीं आता। ऐसे मनुष्य को भले आदमी के लड़के की तरह खूब खिला पिला कर स्वस्थ रखने का भार जिसने लिया है भगवान ही उनकी सहायता करें।

उस दिन सारा दिवस घेरे घेरे एकाएक रात में एक भयंकर आधी आयी। हम तीनों व्यक्ति अलग अलग तीन कमरों में सोते उन कमरों के सामने वाले बरामदे में मिट्टी के तेल का एक दीपक जला करता था। वह बुझ गया था। नदी

तोड़ फोड़ कर उठी थी आकाश फोड़कर मूसलाधार पानी बरस रहा था। उस नदी की लहरों के छलछल और आकाश के जल के झर झर शब्द से ऊपर नीचे मिलकर प्रलय की महफिल में झमाझम करताल बजने लगा। घने अंधकार के गर्भ में क्या हिल डोलकर चल फिर रहा था उसे मैं कुछ भी नहीं देख पाता था फिर भी उसके अनेक प्रकार के शब्दों से सारा आकाश अंधे लड़के की तरह भय से ठंडा हो उठता था। बाँस की झाड़ी में मानों एक विधवा प्रेतिनी रो रही हो, आम के बगीचे में डाल पत्ते मिलकर भाय भाँय शब्द कर रहे थे कुछ दूरी पर नदी के करारे टूट टूटकर धड़ाम धुड़म कर उठते थे और हमलोगों के उस जीर्ण मकान की ठठरियों की दरारों में से बार बार हवा की तीक्ष्ण छुरी बिंध जाती थी जिससे वह एक बड़े जंतु की तरह रह रहकर चिंघाड़ उठता था।

इस तरह की रात्रि में हमलोगों के मन की खिड़कियों और दरवाजों की सिटकिनियां हिल उठती हैं आँधी अन्दर प्रवेश कर जाती है भद्र सामानों को उलट पलट कर देती है पर्दे फर फर करते हुए कौन किस ओर किस ढंग से उड़ने लगते हैं इसका कुछ भी पता नहीं लगता। मुझे नींद नहीं आ रही थी। विस्तर पर लेटे लेटे क्या सब बात सोच रहा था उन्हें यहाँ पर लिखकर क्या होता? इस इतिहास में वे सब बातें जरूरी नहीं।

ऐसे समय में शचीश अपने अँधेरे कमरे में एकाएक बोल उठा कौन है ?

उत्तर सुनाई पड़ा मैं हूँ दामिनी । तुम्हारी खिड़कियाँ खुली हुई हैं कमरे में पानी की बौछार आ रही है इसलिए बन्द करने आयी हूँ ।

खिड़कियों को बन्द करते हुए दामिनी ने देखा कि शचीश अपने बिस्तर से उठ गया है। एक मुहूर्त के लिए वह मानो दुविधा में पड़ गया उसके बाद तेजी से कमरे के बाहर चला गया। बिजली चमक रही थी और एक गम्भीर वज्र का गर्जन होने लगा।

दामिनी बहुत देर तक अपने कमरे की देहरी पर बैठी हुई बाट देखती रही। लेकिन कोई लौटकर आया नहीं। तूफानी हवा की अधीरता क्रमशः बढ़ती ही जा रही थी।

दामिनी से और नहीं रहा गया वह बाहर निकल पड़ी। हवा का वेग इतना प्रखर था कि उसमें खड़ा होना मुश्किल था। मालूम हुआ मानों देवताओं के भृत्य गण उसकी भर्त्सना करते करते उसे ढकेलते हुए जा रहे हैं। अंधकार आज सचल हो उठा है। वर्षा का जल आकाश के समस्त छिद्रों के भर डालने के लिए जीजान से लग गया है। इसी प्रकार विश्व ब्रह्माण्ड को डुबा कर रो सकती तो दामिनी को शान्ति मिलती। अंधकार को एकाएक बिजली ने चमक कर आकाश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पड़पड़ शब्द के साथ फाड़

डाला। उस क्षणिक आलोक में दामिनी ने देखा कि शचीश नदी के किनारे खड़ा है। दामिनी अपनी प्राणपण शक्ति से उठकर एकही दौड़ में एकदम से उसके पैर के पास आ गयी हवा क गम्भीर शब्द को मात करती हुई बोल उठी मैं तुम्हारा पैर छूकर कहती हूँ तुम्हारे निकट मैंने कोई अपराध नहीं किया फिर भी मुझे इस तरह क्यों सजा दे रहे हो ?

शचीश चुपचाप खड़ा रहा।

दामिनी ने कहा मुझे लात मारकर यदि नदी में फेंक देना चाहते हो तो फेंक दो किन्तु घर लौट चलो।

शचीश घर लौट आया। अन्दर प्रवेश करते ही बोल उठा मैं जिनको खोज रहा हूँ उनकी मुझे बड़ी आवश्यकता है—और मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। दामिनी तुम मेरे ऊपर दया करो मुझे छोड़कर चली जाओ।

दामिनी कुछ देर चुपचाप खड़ी रही। उसके बाद बोली, यही होगा मैं चली जाऊँगी।

५

बाद में मुझे दामिनी से आद्योपान्त सभी बातें मालूम हो गयीं लेकिन उस दिन मैं कुछ भी न जान सका था। इसलिए बिस्तर पर पड़े पड़े जब मैंने देखा कि ये दोनों सामने के बरामदे से होते हुए अपने अपने कमरे की ओर चले गये तब ऐसा मालूम हुआ कि मेरे दुर्भाग्य ने सीने पर सवार होकर मेरे गले को धर दबाया है। छटपटा कर उठ बैठा उस रात को मुझे नींद नहीं आयी।

दूसरे दिन सबेरे दामिनी का यह कैसा स्वरूप? कल रात में तूफान का ताण्डव नृत्य पृथ्वी पर केवल इसी लड़की के ऊपर मानों अपना पदचिह्न अंकित कर गया है। इतिहास कुछ भी न जानते हुए मुझे शचीश के ऊपर बड़ा क्रोध आने लगा।

दामिनी ने मुझसे कहा श्रीविलास बाबू मुझे कलकत्ते पहुँचा दो।

यह दामिनी के लिए कितनी बड़ी कठिन बात है यह मैं खूब अच्छी तरह से जानता हूँ लेकिन मैंने उससे कोई प्रश्न पूछा नहीं। एक बहुत बड़ी वेदना में भी मुझे कुछ आराम मालूम हुआ। दामिनी का यहाँ से चला जाना ही अच्छा है। पहाड़ के ऊपर टकराते टकराते नौका तो चूर चूर हो गयी।

आते समय दामिनी ने शचीश को प्रणाम करते हुए कहा श्रीचरणों में अनेक अपराध कर चुकी हूँ क्षमा करना।

शचीश जमीन की ओर आँख झुकाकर बोला मैंने भी अनेक अपराध किये हैं सब माज धोकर ठीक कर लूँगा।

दामिनी के हृदय में एक प्रलय की आग जल रही है। कलकत्ते के रास्ते में आते आते यह मैं अच्छी तरह समझ गया। उसी का ताप लगने से जिस दिन मेरा भी मन बहुत अधिक गरम हो उठा था उस दिन मैंने शचीश को लक्ष्य करके कुछ कड़ी बातें कह दी थीं। दामिनी ने क्रुद्ध होकर कहा देखो तुम उनके सम्बन्ध में मेरे सामने ऐसी बात मत कहना। उन्होंने मुझे किस हदतक बचाया है इसका हाल तुम क्या जानते हो। तुम तो केवल मेरे ही दुःख की तरफ देखते हो— मुझे बचाने के लिए जाकर उन्होंने जो दुःख झेला है उस तरफ शायद तुम्हारी दृष्टि नहीं है? सुन्दर को मारने के लिए गया था इसी कारण असुन्दर की ही छाती में लात लग गया। अच्छा हुआ बहुत अच्छा हुआ। यह कहकर दामिनी धमाधम अपनी छाती पर मुक्कों का प्रहार करने लगी।

मैंने उसका हाथ दबाकर पकड़ लिया।

कलकत्ते पहुंचा तो शाम हो चुकी थी उसी क्षण दामिनी को उसकी मौसी के घर पहुंचाकर मैं अपने एक परिचित मेसमें जा पहुंचा। मुझे पहचानने वालों में जिन्होंने मुझे देखा वे चौंक उठे, बोले यह क्या तुम्हारी तबियत खराब है क्या ?

दूसरे दिन पहली ही डाक से दामिनी की चिट्ठी मुझे मिली मुझे ले चलो यहा मेरे लिए जगह नहीं है।

मौसी दामिनी को मकान में न रखेगी। हमलोगों की निन्दा से शहर में होहल्ला मच गया है। दल से हम लोगों के अलग हो जाने के थोड़े दिन बाद साप्ताहिक पत्रों के पूजा अंक निकले हैं इसलिए हम लोगों की बलिवेदी तैयार थी रक्तपात में त्रुटि नहीं हुई। शास्त्र में स्त्री जातीया पशु की बलि निषिद्ध है किन्तु मनुष्य के लिए उसीमें सबसे अधिक उल्लास रहता है। पत्रों में स्पष्ट रूपसे दामिनी का नामोल्लेख नहीं था किन्तु बदनामी जरा भी अस्पष्ट न हो जाय इसका उपाय किया गया था इसीलिए दूर सम्पर्कीया मौसी का घर दामिनी के लिए भयंकर संकीर्ण हो उठा।

इस बीच दामिनी के बाप मर गये हैं किन्तु भाइयों में से कई हैं यही मुझे मालूम है। मैंने दामिनी से उनका पता ठिकाना पूछा उसने गरदन हिला दी कहा, वे बहुत ही गरीब हैं।

असल बात यह है कि दामिनी उनको परेशानी में डालना नहीं चाहती। भय था कि भाई लोग भी पीछे जवाब न दे दें यहाँ जगह नहीं है। उसका आघात तो वह सहन न कर सकेगी। मैंने पूछा ऐसी हालत में तुम कहाँ जाओगी।

दामिनी ने कहा लीलानन्द स्वामी के पास।'

लीलानन्द स्वामी! थोड़ी देर तक मेरे मुँह से बात नहीं निकली। भाग्य की यह कैसी निदारुण लीला है।

मैंने कहा स्वामी जी क्या तुमको ग्रहण करेगें?

दामिनी ने कहा खुश होकर ग्रहण करेगें।

दामिनी मनुष्य पहचानती है। जो लोग दल सघठन करने वालों की श्रेणी के हैं उन्हें यदि मनुष्य मिलते हैं तो सत्य की प्राप्ति की अपेक्षा भी वे अधिक खुश होते हैं। लीलानन्द स्वामी के यहाँ दामिनी के लिए जगह की कमी न होगी यह ठीक है

किन्तु—

ठीक ऐसे ही समय में मैंने कहा दामिनी! एक रास्ता है यदि अभय प्रदान करो तो बताऊँ।

दामिनी ने कहा बताओ तो सुनूँ।

मैंने कहा यदि मेरे जैसे पुरुष से विवाह कर लेना तुम्हारे लिए सम्भव हो तो—

दामिनी ने मुझे रोककर कहा—यह कैसी बात कह रहे हो श्रीविलास बाबू? तुम क्या पागल हो गये हो?

मैंने कहा समझ लो न कि पागल ही हो गया हूँ। पागल

हो जानपर अनेक कठिन बातो की अति सरलता से मीमांसा करने की शक्ति उत्पन्न होती है। पागलपन अर य उप-यास का वह जूता है—जिसे पहिनन से ससार की हजारों व्यथ की बातों को एकदम पार कर लिया जाता है।

"यथ की बात ? व्यथ की बात तुम किसको कहते हो ?

यही जैसे लोग क्या कहेंगे ? भविष्य में क्या होगा ? आदि आदि।

दामिनी ने कहा और असल बात ?

मैंने कहा किसे तुम असल बात कहती हो ?

यही जैसे मेरे साथ विवा" करन से तुम्हारी कैसी दशा होगी ?

यदि यही असल बात हो तो मैं निश्चि"त हूँ। क्योंकि इस समय मेरी जैसी दशा है उससे और खराब न होगी। दशा का पूर्णरूप से स्थान स्थान परिव"न करा सकन से ही मैं बच जाता। कम से कम करवट बदल सकने पर कुछ आराम मिलता ही है।

मेरे मनोभाव के सम्ब"धमें दामिनी को किसी तारसे खबर नहीं मिली थी इस बात में मैं विश्वास नहीं करता। कि"तु एक दिन यह खबर उसके लिए जरूरी खबर नहीं थी—कम से कम उसका किसी तरह उत्तर देना निष्प्रयोजन था। इतन दिनोंके बाद एक जवाब की मांग उठ खड़ी हुई।

दामिनी चुपचाप सोचने लगी। मैंने कहा दामिनी मैं

संसार में अत्यन्त साधारण मनुष्यों में ही एक हूँ। यहाँतक कि मैं उससे भी कम हूँ मैं तुच्छ हूँ। मुझसे विवाह करना और न करना बराबर है अतएव तुम कुछ भी चिन्ता मत करो।

भामिनी की आँखें छल छल कर उठीं। उसने कहा तुम यदि साधारण मनुष्य होते तो मैं कुछ भी चिन्ता नहीं करती।

और भी कुछ देरतक सोचकर भामिनी ने मुझसे कहा तुम तो मुझको जानते हो।

मैंने कहा तुम भी तो मुझे जानती हो।

इसी तरह बातचीत की गयी। जो सब बात मुहसे नहीं कही गयी उसका परिमाण अधिक था।

पहले ही कह चुका हूँ एक दिन मैंने अपनी अंग्रेजी वक्तृताओं में बहुत अधिक मन लगाया था। इतने दिनों तक अवकाश मिलने से उनमें से बहुतों का नशा छूट गया है। किन्तु नरेन अब भी मुझे वर्तमान युग का एक दैवलब्ध वस्तु ही जानता था। उसके एक मकान में किरायेदार के आने में डेढ़ महीने की देर थी। फिलहाल वहीं जाकर हमलोगों ने आश्रय लिया।

पहले दिन मेरे प्रस्ताव का पहिया टूट कर जिस मौन के गड्ढे में जा गिरा ऐसा मालूम हुआ था कि उसी स्थान पर हाँ और ना इन दोनों के बाहर गिरकर वह अटक गया कम से कम बहुत मरम्मत और बड़ी दौड़ धूप मचाकर यदि उसे ऊपर उठा लिया जाय तो अच्छा हो किन्तु अचिन्तनीय परिहास में

मन को धोखा देने के लिए ही मन की सृष्टि हुई है। सृष्टिकर्ता के उसी आनन्द का उच्च हास्य इस बार के फाल्गुन में इस किराये के मकान की कुछ दीवारों के बीच बारबार प्रतिध्वनित हो उठा।

मैं जो कुछ चीज हूँ इतने दिनों तक दामिनी को इस बात पर लक्ष्य करने का समय नहीं मिला था शायद और किसी तरफ से उसकी आखों में कुछ अधिक प्रकाश आ पड़ा था। इस बार उसका सारा जगत् सकीर्ण होकर वहीं पर आकर रुक गया जहा मैं ही केवल अकेला पड़ा था। इसीलिए मुझको पूरी आँख खोलकर देखने के सिवा दूसरा उपाय नहीं था। मेरा भाग्य अच्छा है इसीलिए उसी समय म दामिनी ने मानो मुझे पहले पहल देखा।

अनेक नदियों पर्वतों समुद्रतटों पर दामिनी के साथ साथ घूमता रहा साथ ही साथ झाँझ करताल के तूफान में रस के तान से हवा में आग लगती रही तुम्हारे चरणों में मेरे प्राण को प्रेमकी फासी लग गयी इस पद की शिखा ने नये नये अक्षरों मे चिनगारियों की वर्षा की है। फिर भी परदा जल नहीं गया।

किन्तु कलकत्ते की इस गलीमें यह क्या हो गया? सटे हुए पड़ोस के मकानों म चारों तरफ मानो पारिजात फूलकी तरह खिल उठे। विधाता ने अपनी बहादुरी तो अवश्य ही दिखा दी है। इन ईंट लकड़ियों को उन्होंने अपने गान का सुर

बना डाला और मेरी तरह साधारण मनुष्य के ऊपर उन्होंने कौनसी स्पर्शमणि स्पश करा दी कि मैं एक क्षण में असाधारण हो उठा।

जब परदा रहता है तब अनन्तकाल की दूरी रहती है, जब परदा टूट जाता है तब वह एक निमेष की बात हो जाती है फिर विलम्ब नहीं हुआ। दामिनी बोली मैं एक स्वप्न मे थी केवल इसी एक धक्को देर थी। मेरे उस तुम और इस तुम के बीचमें यह केवल एक खुमारी आ गयी थी। अपने गुरुको मैं बार बार प्रणाम करती हूँ उन्होंने मेरी यह खुमारी तोड़वा दी है।

मैं ने दामिनी से कहा दामिनी तुम इतना ज्यादा मेरे मुंह की तरफ मत ताको। विधाता की यह सृष्टि जो सुन्दर नहीं है इसका पहले एक दिन जब कि तुमने आविष्कार किया था तब मैंने सह लिया था किन्तु अब सह लेना बहुत कठिन हो जायगा

दामिनी ने कहा विधाता की यह सृष्टि बहुत सुन्दर है मैं इसी का आविष्कार कर रही हू ।

मैंने कहा इतिहास में तुम्हारा नाम रहेगा। उत्तर मेरु के बीचोंबीच जो दुस्साहसी अपना झण्डा गाड़ेगा उसकी कीर्ति भी इसके सामने तुच्छ है। यह तो दु साध्य साधन नहीं है यह तो असाध्य साधन हैं।

फागुन का महीना इतना ज्यादा छोटा होता है पहले कभी इतना असन्दिग्ध होकर नहां समझा था। केवल तास ही

दिन—दिन भी चौबीस घंटे से एक मिनट भी अधिक नहीं। विधाता के हाथ में काल अनन्त है तो भी इस तरह भद्दी शक्ल की कृपणता क्यों है यह तो मैं समझ नहीं सकता।

दामिनी ने कहा तुम जो यह पागलपन करने को तैयार हो गये हो तुम्हारे घर के लोग—

मैंने कहा वे मेरे सुहृद् हैं। इस बार वे लोग मुझे घर से दूर निकाल देंगे। उसके बाद।

उसके बाद तुम और मैं मिलकर दोनों एकदम नये सिरेसे शुरूसे अन्त तक पूरा मकान बनवावेंगे—उसकी सृष्टि में केवल हम दोनों का ही हाथ रहेगा।

दामिनी ने कहा और उस घरकी गृहिणी को एकदम जड़से मरम्मत कर लेना होगा। वह भी तुम्हारे ही हाथ की सृष्टि हो जाय, पुराने समय की टूटी फूटी चीजें उसमें कहीं पर कुछ भी न रहें।

चैत के महीने में दिन नियत करके विवाह का बन्दोबस्त किया गया। दामिनी ने जोर देकर कहा शचीश को बुलाना पड़ेगा।

मैंने कहा क्यों ?

वे कन्या सम्प्रदान करेंगे।

वह पागल जो कहाँ घूम रहा है इसका पता ही नहीं है। चिट्ठी के बाद चिट्ठी लिखने लगा उत्तर ही नहीं मिलता। अवश्य ही अबतक भी वह उसी भुतहे मकान में है, नहीं तो चिट्ठी वापस चली आती। किन्तु वह किसी की चिट्ठी खोलकर पढ़ता है या नहीं इसमें सन्देह है।

मैंने कहा दामिनी खुद जाकर तुमको उसे निमन्त्रण दे आना होगा पत्र द्वारा निमन्त्रण त्रुटिके लिए क्षमा'—यह

बात यहाँ न चलेगी। अकले ही जा सकता था किन्तु मैं डरपोक आदमी हूँ। वह शायद इतनी देर में नदी के उस पार जाकर चकवों की पीठ के पर साफ करने की जाँच कर रहा है वहाँ तुम्हारे सिवा जा सके ऐसी चौड़ी छाती और किसी की नहीं है।

दामिनी ने हँसकर कहा वहा फिर कभी न जाऊँगी। मैंने प्रतिज्ञा की थी।

मैंने कहा, भोजन लेकर न जाओगी यही प्रतिज्ञा थी— भोजन का निमंत्रण लेकर जाओगी क्यों नहीं ?

इस बार किसी तरह की दुघटना नहीं हुई। दोनों जन दोनों हाथ पकड़कर शचीश को कलकत्त गिरफ्तार करके ले आये। छोटे छोटे लड़के खिलौने पाकर जिसतरह खुश होते हैं शचीश हम लोगों के विवाह की बात को लेकर उसी तरह खुश हो गया। हमलोगों ने सोच रखा था कि चुपचाप शुभ कम सम्पन्न कर दिया जायगा शचीश ने किसी तरह भी ऐसा नहीं होने दिया। विशेषत बड़ चाचा के उस मुसलमानी मुहल्ले के लोगों को जब खबर मिली तब वे लोग इतना हल्ला मचाने लगे कि मुहल्ले के लोग सोचने लगे काबुल के अमीर आ रहे हैं अथवा कम से कम हैदराबादके निजाम हैं।

और भी धूम मच गयी। अखबारों में दूसरी बार के पूजा अंक में एक जोड़ा बलिदान हुआ। हम उन्हें अभिशाप न देंगे। जगदम्बा सम्पादकों के खजाने में वृद्धि करें और पाठकों के नर रक्त के नशे में कम से कम इस बार की तरह कोई विघ्न न पहुंचे।

शचीश ने कहा विश्री, तुमलोग मेरे मकान का भोग करो।

मैंने कहा तुम भी हमलोगोंके साथ आकर शामिल हो जाओ फिर हमलोग काम में लग जायँ।

शचीश ने कहा नहीं मेरा काम अन्यत्र है।

दामिनी ने कहा हम लोगोंके बहूभात का निमन्त्रण पूरा किये बिना जा न सकोगे।

बहूभातके निमन्त्रणमें बुलाये जाने वालों की संख्या असम्भव रूपसे अधिक नहीं थी। उसमें था वही शचीश।

शचीश ने तो कह दिया आकर हमारे मकान का भोग करो किन्तु वह भोग कैसा है यह तो हमलोग ही जानते हैं। हरिमोहन ने उस मकान पर कब्जा करके किरायादार बसा दिया है। खुद ही व्यवहार में ला सकते थे किन्तु पारलौकिक लाभ हानि के सम्बन्ध में जो लोग उनके मन्त्री थे उन्होंने अच्छा नहीं समझा—वहाँ प्लेग में मुसलमान की मृत्यु हुई थी। जो किरायादार आवेगा उसकी भी तो एक—किन्तु यह बात उससे छिपा रखने से ही काम बन जायगा।

मकानका हरिमोहन के हाथ से किस तरह उद्धार किया गया इसमें बहुत बात हैं। मेरे प्रधान सहायक थे मुहल्ले के मुसलमान लोग। और कुछ नहीं जगमोहन का वसीयतनामा उन लोगोंको एक बार दिखाया था। मुझे फिर वकील के घर दौड़ धूप करने की जरूरत नहीं पड़ी।

इतने दिनों तक घर से बराबर कुछ सहायता मिलती थी वह अब बन्द हो गयी है। हम दोनों एक साथ मिलकर सहायता के बिना गृहस्थी चलाने लगे उसमें हमें आनन्द मिलता था। मेरे पास राय चाँद प्रेम चाँद का मार्का था—सहज में ही प्रोफेसरी मिल गयी। उसके बाद परीक्षा पास की। पेटेण्ट औषधियां मैंने तैयार कर ली—पाठ्य पुस्तकों के मोटे मोटे नोट। हम लोगोंका अभाव थोड़ा ही था इतना करने की जरूरत नहीं थी। किन्तु दामिनी ने कहा शचीश

को अपनी जीविका के लिए चिन्ता न करनी पड़े यह हम लोगों को देखना चाहिये। और एक बात दामिनी ने मुझसे नहीं कही। मैंने भी नहीं कही चुपचाप काम पूरा करना पड़ा। दामिनी की दोनों भतीजियोंका सत्पात्रों के साथ विवाह हो सके और जो कई भतीजे हैं वे लिख पढ़कर मनुष्य बनें यह देखने की शक्ति दामिनी के भाइयों मे नहीं थी। वे लोग हम लोगों को अपने घर म प्रवेश करने नहीं देते—किन्तु आर्थिक सहायता नाम की चीज का कोई जाति या कुल नहां है। विशेषत उसे जब कि केवल ग्रहण करना हो जरूरी है स्वीकार करना निष्प्रयोजन है।

इसलिये मुझे अन्य कामों क बाद एक अंग्रजी अखबार की सब एडीटरी लेनी पड़ी। मैंने दामिनी से कहे बिना एक उड़िया ब्राह्मण रसो या एक बेहरा और एक नौकर का बन्दोबस्त कर लिया। दामिनी ने भी मुझसे कुछ न कहकर उन सभी को बिदा कर दिया। मैंने ज्यों ही आपत्ति की उसने कहा तुम लोग कवल उलटा समझकर ही दया करते हो। तुम परिश्रम करके परेशान हो रहे हो और यदि मैं न परिश्रम कर सकूँ तो मेरे उस दुःख और मेरी लज्जाको कौन ढोवेगा।

बाहर का मेरा काम और अन्दर का दामिनी का काम इन दोनों के मिल जाने से मानो गगा यमुना का स्रोत मिल गया। इसके अतिरिक्त दामिनी ने मुहल्ले की छोटी छोटी मुसलमान लड़कियों को सीना पिरोना सिखाना शुरू किया। किसी तरह भी वह मुझसे हार न मानेगी यही उसका प्रण था।

यही कलकत्ता शहर वृन्दावन हो गया है और जीजान

से काम करते रहना ही बांसुरी की तान है इस बात को मैं ठीक सुरने कह सकू ऐसी कवित्व शक्ति मुझमें नहीं है। किन्तु दिन जो बीतने लगे वे पैदल चलने से नहीं दौड़ने से भी नहीं एकदम नाचकर चले गये।

और एक फागुन बात गया। उसके बाद फिर नहीं बीता।

उस बार गुहा से लौट आने के बादसे दामिनीकी छाती में एक व्यथा होने लगी थी उस व्यथा की बात उसने किसी से नहीं कही। जब उसका प्रकोप बढ़ गया तब पूछने पर वह बोली यह व्यथा मेरे लिए गुप्त ऐश्वर्य है यह मेरी स्पर्श मणि है। इसी कौतुकको लेकर ही तो मैं तुम्हारे पास आ सकी हूँ नहीं तो मैं क्या तुम्हारे योग्य हूँ।

डाक्टरों में से एक एक व्यक्ति इस बीमारी का एक एक नामकरण करने लगे। उनके किसी के भी प्रेस्क्रिप्शन के साथ किसी का मेल नहीं बैठा। अन्त में विजिट और दवाखाने के देने की आग से मेरे सचित सोने को खाक बनाकर उन लोगोंने लका काण्ड समाप्त कर दिया और उत्तर काण्ड में मन्त्रणा देदी कि हवा पानी बदलना पड़गा। तब हवा के अतिरिक्त मेरे पास और कोई भी चीज बाकी नहीं रह गयी थी।

दामिनीने कहा जहां से यह व्यथा ढोकर ले आयी हूँ मुझे उसी समुद्र के किनारे ले चलो—वहा हवा का अभाव नहीं है।

जिस दिन माघ की पूर्णिमा फागुन में जा पड़ी ज्वार से भरे आँसू की वेदना से सारा समुद्र फूल फूल उठने लगा उस दिन दामिनीने मेरे पैरों की धूलि लेकर कहा साधना नहीं मिटी दूसरे जन्म में फिर तुमको पाऊँ यही चाहती हूँ।

समाप्त

हमारी प्रकाशित पुस्तकें

भौंवरा ३॥)
निर्मोही २॥।)
लवंग ४)
जवानी का नशा २।)
लाल रेखा ३॥)
अकेला २॥)
कुंकुम ३)
जलन २॥)
बसेरा २॥)
ठोकर १॥।)
चूड़ियाँ ४॥)
बंधन १।)
उजड़ा घर १॥)
नरमेध २)
नर और नारी २॥)
प्रेम के आंसू १॥।)
हाहाकार २।)
इशारा २॥)
गरीब १॥।)
राजकुमारी १॥)
नदी में लाश २)
होटल में खून १॥)
साहसी राजपूत १॥)